Fortnightly per copy Rs. 12/- only

ओ३म्

18th May 2017

आर्य जीवन
ఆర్య జీవన్

संस्कृति संरक्षण व सामाजिक परिवर्तन का संकल्प
హిందీ-తెలుగు ద్విభాషా పక్ష పత్రిక

Date of Publication 2nd & 17th of every Month, Date of posting 3rd and 18th of every month

उच्चतम न्यायालय ने निर्भया काण्ड के दोषियों को मृत्यु दण्ड देने के बावजूद

रोहतक हरियाणा में फिर निर्भया काण्ड

इंसानियत फिर से तार-तार हुई

दोषियों को सार्वजनिक मृत्यु दण्ड दिया जाए

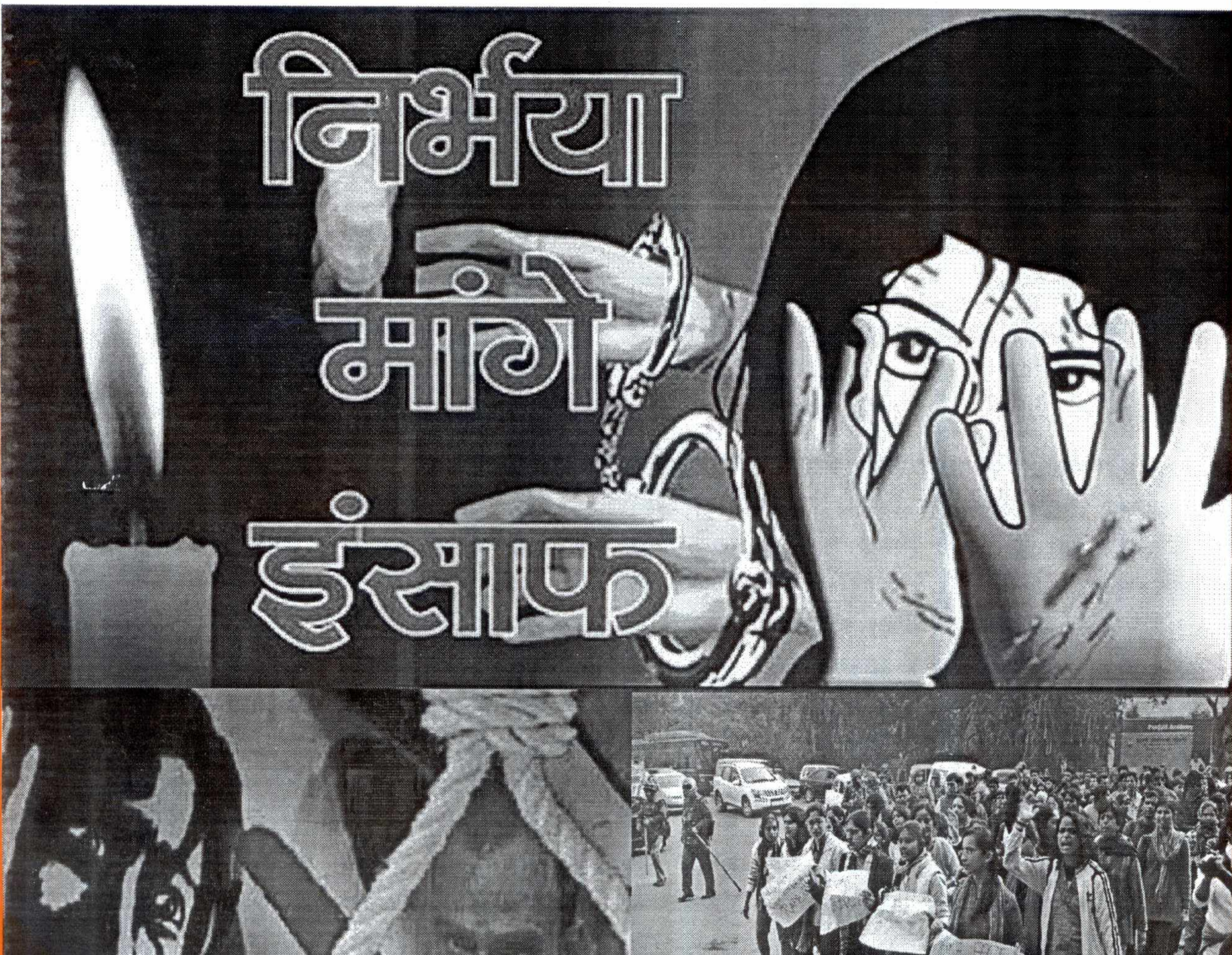

फिर निर्भया: कानून बने तो ऐसा !

डह्र. वेदप्रताप वैदिक

आज सुबह जैसे ही मैंने अखबार खोले, मेरा खून खौल उठा। फिर निर्भया ! अभी एक हफ्ता ही हुआ है, निर्भया के बलात्कारियों को मृत्युदंड की घोषणा को और रोहतक के इन नर-पशुओं की इतनी हिम्मत पड़ गई ! क्यों पड़ गई, इतनी हिम्मत इनकी ? क्या इसलिए नहीं कि सर्वोच्च न्यायालय की उस सजा का उन पर या किसी भी दरिंदे पर कोई असर नहीं हुआ ? निर्भया के बलात्कार और हत्या ने सारे देश को हिला दिया था लेकिन उसके बलात्कारियों की सजा के कारण किसी के सिर पर जूं भी नहीं रेंगी। क्यों नहीं रेंगी ? इसके लिए कोई जिम्मेदार है तो हमारी संसद है और अदालतें हैं। दोनों का रवैया बेहद कठोर होना चाहिए। जस्टिस वर्मा कमेटी ने निर्भया-कांड के बाद सजा-ए-मौत की सिफारिश की थी। उसके आधार पर कानून भी बना लेकिन सजा-ए-मौत भी बेअसर साबित हो रही है। निर्भया-जैसे कांड पिछले चार साल में कई हो गए हैं। ऐसा इसलिए होता है कि अदालत के फैसले इतनी देर में आते हैं कि लोग उस घृणित बलात्कार और हत्या को भूल चुके होते हैं। इसके अलावा फांसी पर चढ़ाने का काम गुपचुप होता है जबकि अपराध खुले-आम होता है। यदि इन अपराधियों के साथ वही बर्ताव किया जाए, जो इन्होंने उन युवतियों के साथ किया था याने उन्हें खुले आम फांसी दी जाए, उनके अंग भंग किए जाएं और उन्हें मरते हुए लाखों-करोड़ों लोगों को देखने-दिखाने दिया जाए तो भावी बलात्कारियों की हड्डियों में कंपकंपी दौड़ सकती है। बलात्कार करनेवाले हत्यारों के माता-पिता के लिए भी कठोर कारावास की सजा अवश्य होनी चाहिए, क्योंकि वह कुकर्म उनकी कुशिक्षा या उपेक्षा का ही परिणाम है। यदि संसद ऐसा कानून पास करे और अदालतें अधिक से अधिक एक माह में फैसला दे दें तो देखें, फिर यह पशुता घटती है या नहीं ? बिजली के तार को क्या कभी आपने किसी को छूते हुए देखा है , नहीं ! क्यों ? क्योंकि उसे पता होता है कि उसे ज्यों ही छुआ कि प्राण गए ! कानून बने तो ऐसा बने !

रोहतक काण्ड

रोहतक की निर्भया के साथ किस प्रकार से वहशियत हुई, इसकी तमाम हकीकत जानने की गर्ज में सीन आफ क्राइम को रि-क्रिएट किया जाएगा। इसके पीछे मकसद सीधा सा यही है कि इस केस से जुड़ी हर छोटी से छोटी बात को स्पैशल इंवैस्टिगेशन टीम न केवल करीब से जान सके बल्कि उसी हालात के मुताबिक निर्भया कांड के तमाम आरोपियों के खिलाफ स्ट्रांग एविडैंस खड़े किए जा सकें ताकि, पुलिस इस केस को रेयरेस्ट आफ द रेयर केस के तौर पर अदालत के सामने पेश कर सके और पुलिस के हाथ में इतने मजबूत साक्ष्य हों कि उनकी बिनाह पर निर्भया के गुनाहगारों को उनके जुर्म की कड़ी से कड़ी सजा दिलवाई जा सके।

आमतौर पर होता क्या है कि अदालत में जब भी इस प्रकार के किसी संगीन जुर्म की सुनवाई चलती है तो मामले को उसके अंजाम तक ले जाने में सबसे अहम रोल होता है आई विटनेस का, मगर रोहतक के बहुचर्चित कांड का चूंकि कोई ऐसा चश्मदीद अभी तक सामने नहीं आया है जिसकी बिनाह पर पुलिस इन बलात्कारी हत्यारों को कठोरतम सजा दिला सके। लिहाजा, पुलिस का पूरा ध्यान फिलहाल इस केस से जुड़े सालिड लिंक एविडैंस एवं सर्कमस्टांशियल एविडैंस कलैक्ट करने पर है ताकि केस को पूरी तरह से मजबूत किया जा सके। अधिकतर लिंक एवं सर्कमस्टांशियल एविडैंस के जरिये पुलिस इस केस की तमाम कडियों को आपस में जोडने की मंशा रखती है। अगर, पुलिस ऐसा करने में कामयाब होती है तो इसका सीधा सा अर्थ यही होगा कि बिना किसी आई विटनेस के भी सुनवाई के दौरान पुलिस अपर हैंड पोजीशन में होगी। एक आला पुलिस अधिकारी ने भी पुलिस की इस मंशा को स्वीकारा। वे बोले हां, हम लोग इस केस से जुड़े तमाम स्ट्रांग लिंग एवं सर्कमस्टांशियल एविडैंस कलैक्ट कर रहे हैं। इसके अलावा फारैंसिक एक्सपर्ट्स की भी मदद ली जा रही है ताकि केस को वैज्ञानिक एवं मैडीकली भी हम आसानी से प्रूव करने की पोजीशन में हों।

आओ चुने राह के काँटे

जहाँ वेदों का प्रकाश, वहीं संसार का विकास

आदरणीय संयोजक मण्डल, पूज्यनीय संन्यासीगण, सम्मानीय विद्वत मण्डल, प्यारे आर्य भद्र पुरूषों, प्यारे बच्चों ! आज वर्ग विशेष ही नहीं सम्पूर्ण संसार के सुधार हेतु हैदराबाद की पावन भूमि पर माननीय पण्डित विठ्ठलराव जी ने सम्मेलन द्वारा पूज्य पण्डित नरेन्द्र जी का स्मरण कराते हुए आर्य समाज और हम सबका मान बढाया है । सम्मेलन का विषय राष्ट्रीय, अर्न्तराष्ट्रीय समाधान हेतु आर्य समाज की दिशा व दृष्टिकोण क्या हो । बन्धुओं !

किसी भी राष्ट्र और मानवीय उन्नति का आधार धर्म-संस्कृति होती है । भौतिक विकास और मानव शक्ति राष्ट्र का शरीर है, तो संस्कृति उसकी आत्मा होती है । आत्मा बिना शरीर रूपी राष्ट्र मृत प्रायः रोग दोष युक्त वस्तु मात्र रह जाता है । वर्तमान में चहु ओर जाति, भाषा, क्षेत्र, समप्रदाय, व्यक्तिवादी आतंक मानवता को कलंकित कर रहे है । अनेकों पक्षपाती संस्थाए धर्म के नाम पर मानवीय भावानाओं का शोषण करके प्रकृति और मानवता के विनाश को आमंत्रित कर रहीं हैं । ऋषियों की परम्परा में एक मात्र आर्य समाज संसार के वैचारिक विद्वानों का मार्ग दर्शक विश्वसनीय संगठन है । जो प्रभू प्रदत्त आत्मिक धर्म, न्याय, दया, करुणा, प्रेम, सत्य, अहिंसा, ज्ञान, सेवा आदि सिद्धान्तों की स्थापना को स्वीकार करता है । इस कारण आदि सृष्टि से आर्यवर्त (भारत भूमि) पूज्यनीय है । ऋषियों की श्रृंखला में महाभारत से एक हजार वर्ष पूर्व प्रारम्भ मानवीय पतन से दुखी महर्षि दयानन्द जी ने संसार को पुनः वैदिक मार्ग दिखाया और स्वतः आंदोलनों को समाजिक कुरीतियों के विरूद्ध प्रारम्भ किया । और सत्यार्थ प्रकाश में भारत ही नहीं संसार की उन्नति हेतु लिखा ''एक धर्म, एक भाषा, एक लक्ष्य बनाये बिना भारत (संसार) का पूर्ण हित और जातीय उन्नति का होना दुष्कर है । सब उन्नतियों का केन्द्र स्थान एक्य है जहाँ भाषा, भाव, भावना में एकता आजाये वहाँ सारे सुख एक-एक करके सागर में नदियों की भांति प्रवेश करने लगते हैं ।'' सभी समस्याओं का समाधान वेद मार्ग बतलाया । अतः वेदानुकूल सार्वभोम प्रयास ही सम्मेलन के उद्देश्य को पूर्ण कर सकतें हैं । **संसार के हितेषी जन समाज की क्षमता से परिचित समाज का नेतृत्व चाहते हैं । आर्य समाज से प्रभावित यूरोपिय विद्वान ''एन्ड्र जैक्सन डेविस'' ने कहा था । ''आर्य समाज की भट्टी में सुलगती-धधकती आग सारे आध्यात्म ही नहीं भौतिक उन्नति में भी सबसे बडी बाधा अविद्या है । जो सब दुखों का मूल है ।** अतः हमें सभी सुधार हेतु शिक्षा विषय को प्राथमिकता देनी चाहिए । यथा--

- शिक्षा (विद्या) का समान होना आवश्यक है । समस्त भारत का पाठ्यक्रम एक हो, तथा सभी राज्य पाठ्यक्रम को अपनी-अपनी क्षेत्रिय भाषाओं में पढ़ावें, किन्तु लिपि एक हो सभी भारतीय भाषाओं में अधिकतर शब्द वैदिक हैं । इसलिए पाठ्यक्रम निरुक्त निघन्दु माध्यम से पर्यायवाची विषय शब्द विज्ञान को पढ़ाया जाये । इससे वेदों का स्वयं प्रचार होगा । विचार भेद न रहेगा । विचार एकता से क्षेत्रवाद, भाषाभेद मिटेगा, सीमाभेद कम होगा । राष्ट्रवाद की नींव सुदृढ़ होगी । आई.ए.एस., आई.सी.एस., आई.पी.एस डॉक्ट्रेट, तकनीकी भर्तियों के लिए सभी परीक्षाओं में मतभेद न होंगे । यह तभी सम्भव है जब शिक्षा केन्द्रीय सरकार के अधीन हो । **सभी राज्यों में सभी को निःशुल्क शिक्षा हो, ऐसा होने पर आरक्षण न दिया जाये ।**-- कारण वश दिया आरक्षण योग्यतानुसार परिवार के मात्र एक व्यक्ति को एक ही बार दिया जाये, पीढी दर पीढी नहीं ।
- ★ **शराबबन्दी, मांसाहार विरुध, शिक्षा व नारी रक्षा में सम्प्रदायिक बुराईयों के विरुध सभी मत मतान्तरों के सहयोग से आन्दोलन चलायें जाये ।** क्योंकि ऋषिवर ने समाज के छटवें नियम में संसार का उपकार करना समाज का मुख्य उद्देश्य कहा है । वर्ग विशेष, क्षेत्र वा सम्प्रदाय विशेष का नहीं ऋषिवर की सभी मान्यतायें संगठनात्मक पुरूषार्थ और आचरण परक है । रूढीवादी औपचारिक नहीं ।
- ★ एम.बी.बी.एस.- बी.फार्मा, एम.फार्मा, बी.एड, पुलिस फोर्स, बैंक आदि क्षेत्रों में भी परस्पर जीवन साथी बनें । प्रोत्साहन हेतु आर्य समाज एवं सरकार व्यवसाय प्रबन्ध, आर्थिक प्रोत्साहन, व्यवसाय में पदोन्नोति देकर प्रोत्साहित करें । ऐसे शिक्षित युगलों को शर्मा पुलिस फोर्स से सम्बन्धित युगलों को वर्मा, व्यापारी एवं कृषि क्षेत्रियों को गुप्त, शेष कार्य सहयोगियों को आर्यबन्धु घोषित करें । इससे जातिवाद, क्षेत्रवाद, सम्प्रदायवाद, दहेजप्रथा का अन्त होगा । योग्यता का सम्मान और राष्ट्रीय विकास होगा ।
- ★ ६० वर्ष आयु के बाद कोई आर्य समाज पदाधिकारी न बने प्रत्येक वर्ष नये पदाधिकारी चुने जायें ।
- * ६० वर्ष के उपरान्त योग्य वृद्ध वानप्रस्थी अपने कार्य क्षेत्र में निःशुल्क शिक्षा, सुरक्षा, चिकित्सा, आदि सेवा कार्य करें । संन्यासीगण स्थान विशेष के आश्रित न हों । भजन समाधि से अतक्ति समय को सर्बत्र समाज हित में लगावें । योग्तानुसार वेद परूचार से प्राप्त
- * राशी का कुछ भाग सार्वदेशिक सभा को देवें । उनका सम्पूर्ण जीवन दायित्व सभा लेवें ।
- * सभी उपदेशक व भजनोपदेशक सार्वदेशिक सभा से पंजीकृत हों । जनपदीय सभा के दक्षिणा से शतांश, प्रान्तीय सभा को दशांश देकर ही दक्षिणा प्राप्त करें । जिससे प्रचार कार्य में उन्नति होवे । ऐसा न करने पर प्रवचन उपदेश से उनका वहिष्कार किया जाये । प्रत्येक समाज सप्ताहिक सत्संग गली, नगर, मोहल्लों, में परिवारों के सहयोग से करें । कार्यक्रम में पुरुष और महिला सदस्य घर-घर जाकर निमन्त्रण देवें । योग्य समाजसेवी महिलाओं को सम्मानित

किया जाये । समाज धर्म प्रचार में इनका योगदान विशेष होता है। यज्ञ बाद नगर, गली की आवश्यकता ?अनुसार स्वच्छता, मार्ग निमार्ण जल व्यवस्था, विद्युत, टेलीफोन, राशन कार्डव वोटर आईडी,

* आधार कार्ड बचों की पढ़ाई, चिकित्सा, बैंक आदि कार्यो में सहयोग श्रमदान करके समाज में स्नेह विश्वास को बढ़ावें । सभी आर्यजन प्रतिदिन कुछ समय परिवारों में विशेषतः युवाओं से जन सम्पर्क करें, उनकी समस्याओं को सुने, यथोचित समाधान करें ।
* सत्यार्थप्रकाश कक्षाएं लगावें, गोषिठ्यों में तर्क वितर्क, वाद-विवाद प्रतियोगिता हो । उन्हे पुरस्कृत किया जाए ।
* चौराहों, मुख्यमार्गो, बस स्टैंड, शहरी उद्यानों में वेदों के संदेश, महापुरुषों आर्य विद्वानों, देशभक्तों के नाम से छपे वोर्ड लगाये जाये । स्वामी आर्यवेष जी की भाँति शिविर लगायें जायें, ऋषि ग्रन्थ आर्योद्देश्यरत्नमाला, गोकरुणानिधि, व्यवहार भानु, संस्कार विधि
* महर्षि दयानन्द सरस्वती जी द्वारा रचित ग्रन्थ भेट किये जायें ।
* गरीबों को भरण-पोषण हेतु व्यवसाय के मार्ग बतलावें । पुरोहित को दीक्षा गुरु रूप में प्रस्तुत किया जाये । आर्य पुरोहित यज्ञ संध्या का समयानुकूल अर्थ सहित पाठ करावें । उनका अध्यात्म और वैज्ञानिक समाधान करें । जो मानवीय उन्नति में सहायक हो । यज्ञ पद्धति सार्वदेशी धर्माय सभा से अनुमोदित हो । पुरोहित दक्षिणा व दान आम समाज के समक्ष न लें । यह कार्य समाज मंत्री, प्रधान के आधीन हो । पुरोहित का
* भरण-पोषण, गृह आवश्यकता की समाज व्यवस्था करें ।

जिला सभा-तिमाही सम्मेलन गांव-गांव करे । प्रान्तीय सभा प्रत्येक माह जनपदों में सम्मेलन करें । जनपदीय सम्मेलनों में ग्राम समाजं के प्रान्तीय सम्मेलनों में जनपदीय सभाओं के अधिक से अधिक अथवा कम से कम दो सदस्य अवश्य जायें । दोनों सभायें मासिक पत्र में कार्यक्रम की समीक्षा व आगामी कार्यक्रम की सूचना, ऋषि ग्रन्थों के सन्दर्भ सहित छपावें । व्यक्ति प्रशंसा और आक्षेप न हों ।

बन्धुओं ! हमारे धर्म-ग्रन्थ, साहित्य और कार्यक्मर प्रक्रिया, विचार मन्थन उत्तम किन्तु सैल्समैन्सिप इुपरस्तुतिकरण कमजोर है । वर्तमान भ्रष्ट शराबी, जातिवादी मात्र कुछ व्यक्ति सांसद और विधायक चुनवाते है । हम अनेक समाज सेवी अपने श्रमदान, सेवा, विश्वास के बलपर विधायक भी चुनकर राज्य व केन्द्र सरकार में भेज सकते हैं ।

बन्धुओं ! हमारे धर्म-ग्रन्थ, साहित्य और कार्यक्रम प्रक्रिया, विचार मन्थन उत्तम किन्तु सैल्समैन्सिप प्रस्तुतिकरण कमजोर है । वर्तमान में भ्रष्ट शराबी, जातिवादी मात्र कुछ व्यक्ति सांसद और विधायक चुनवाते है । हम अनेक समाज सेवी अपने श्रमदान, सेवा विश्वास के बलपर विधायक भी चुनकर राज्य व केन्द्र सरकार में भेज सकते हैं

बन्धुओं ! उपरोक्त समस्त कार्य सदाचार त्याग बलिदान सांगठनात्मक शक्ति से परे किये जा सकते है । किन्तु आज हम त्याग बलिदान से कोषों दूर ऋषिवर द्वारा किये आन्दोलन कार्यो से सन्तुष्ट होकर जीवन यापन हेतु व्यवसाय बनाकर मान प्रतिष्ठा और धन कमाने का ढोग बना बैठे हैं । बदलते समय की आवश्यकताओं के अनुरूप नये आन्दोलन किये बिना समाज अपनी पहचान और सम्मानीय प्रतिष्ठा प्राप्त नहीं कर सकता । हम सब सम्मेलन में सामाजिक उन्नति की इच्छा लेकर आये हुए है । अतः सभा प्रधान और संयोजक माननीय मंत्री श्रीमान् विठ्ठलराव जी के नेतृत्व में शपथ ग्रहण करें कि जीवन पद्धति आचरण परक बनायेगें । जीवन का अधिक समय ऋषि ऋण उतारने में समर्पित करेगें ।

-पं० राजवीर आर्य

मालूम नही किसने लिखा है, पर क्या खूब लिखा है..

नफरतों का असर देखो,
जानवरों का बटंवारा हो गया,
गाय हिन्दू हो गयी और
बकरा मुसलमान हो गया.

मंदिरो मे हिंदू देखे, मस्जिदो में मुसलमान,
शाम को जब मयखाने गया,
तब जाकर दिखे इन्सान.

ये पेड़ ये पत्ते ये शाखें भी परेशान हो जाएं
अगर परिंदे भी हिन्दू और मुस्लमान हो जाएं

सूखे मेवे भी, ये देख कर हैरान हो गए
न जाने कब नारियल हिन्दू और
खजूर मुसलमान हो गए..

न मस्जिद को जानते हैं, न शिवालों को जानते हैं
जो भूखे पेट होते हैं, वो सिर्फ निवालों को जानते हैं.

अंदाज जमाने को खलता है.
कि मेरा चिराग हवा के खिलाफ क्यों जलता है...

मैं अमन पसंद हूँ , मेरे शहर में दंगा रहने दो..
लाल और हरे में मत बांटो,
मेरी छत पर तिरंगा रहने दो....

जिस तरह से धर्म मजहब के नाम पे
हम रंगों को भी बांटते जा रहे है
कि हरा मुस्लिम का है, और लाल हिन्दू का रंग है

तो वो दिन दूर नही
जब सारी की सारी हरी सब्जियाँ,
मुस्लिमों की हों जाएँगी

और

हिंदुओं के हिस्से बस
टमाटर, गाजर और चुकुन्दर ही आएंगे!

अब ये समझ नहीं आ रहा कि
ये तरबूज किसके हिस्से में आएगा ?

ये तो बेचारा ऊपर से मुस्लमान और
अंदर से हिंदू ही रह जायेगा...

भारत के विकास में राष्ट्रीय चरित्र की भूमिका

- प्रभा शास्त्री

वायु पुराण के एक श्लोक से प्राचीन भारत की सीमा का निर्धारण किया जा सकता है।

उत्तरं यत्समुद्रस्य हिमवद्यक्षिणं च यत् ।
वर्षं तद् भारतं नाम यत्रेयं भारती प्रजा ॥

अर्थात् समुद्र उत्तर और हिमाल के दक्षिण स्थित विशाल भूखण्ड है। इसके निवसियों को भारती या भारतीय कहां जाता है। १५ अगस्त १९४७ को स्वतन्त्र हुए आधुनिक भारत की परिभाषा में पश्चिम में पाकिस्थान और पूर्व में बंग्लादेश और जोड़ लेना चाहिए।

भारत के विकास में राष्ट्रीय चरित्र की चर्चा से पूर्व हम विचार करे तो यह पाते है कि स्वतंत्रता संग्राम के समय इस देश में अखण्ड राष्ट्रीय चेतना का जो प्रवाह उमडा था, उसमें काफी कमी आई है। ऐसी बात नहीं की राष्ट्री के प्रति हमारे मन में अनुराग की कमी है। किन्तु उस अनुराग में जिस निष्ठा की अपेक्षा है, उसका अभाव अवश्य है। राष्ट्र के स्थान पर क्षेत्र ने हमारे मन में आसन्न जमा लिया है। प्रांतीयता और क्षेत्रीयता कि भावना ने राष्ट्रीय चिन्तन को कुण्ठित करना प्रारंभ कर दिया है। अब भारतीय कहलाने के स्थान पर बंगाली, बिहारी, मद्रासी, पंजाबी आदि कहलाना अच्छा लगने लगा है। प्रान्तीयता और क्षेत्रीयता की भावना हमारी राष्ट्रीय एक के मार्ग में बाधा डाल रही है। अलगाववाद की यह भावना राष्ट्र को कमज़ोर बना रही है। हम अपने प्रियदेश भारत वर्ष के समुचित एवं सर्वविध विकास के लिए जिस राष्ट्रीय चरित्र की आवश्यकता समझते है उसके प्रमुख उपादान अधोलिखित है।

१) **गौरवशाली इतिहास से प्रेरणा :-** आत्मा की अतःप्रेरणा और उसमें शक्ति भरने के लिए हमें अपने देश के प्राचीन, आध्यात्मिक और नैतिक मुल्यों के श्रोत वेद, उपनिषदों, भगवद्गीता और धम्मपद की ओर मुड़ना होगा। हमारी परम्पराओं को प्रादूरभूत करने में ही इन ग्रन्थों का योग नहीं रहा है, अपितु हज़ारो लाखों वर्षों से हमारे पूर्वोजों के विचार इन में निहित है। हमारे दैनिक जीवन के व्यवहार में आने वाले हजारों शब्द इन में से ही गढ़े गए है। यदि अतीत के पिछले १००० १५०० हजार वर्षों में कुछ दोषपूर्ण और नीचे गिराने वाला कुछ तत्व मिलता है, तो उससे ज्यादा उनमें (प्राचीन भारत के स्वर्णीम ऐतिहास और माननी ग्रन्थों में) बहुत कुछ ऐसा भी है जो जीवनदायी और ऊपर उठाने वाला है। भारतीय चिन्तन के किसी अध्येता के लिए सबसे अधिक प्रेरणापद कार्य यहीं है कि अपने आध्यात्मिक ज्ञान के कुछ पहलुओं को उजालगर उसे जीवन में लगु करें।

दुर्भाग्य से पिछले डेढ़ हजार वर्ष से हमारे देश की सामाजिक संमचना ही कुछ ऐसे बन गई, जिसमें सवर्ण-असर्ण, द्विज-शूध्र, छूत-अछूत, छोटे-बड़े, धनी-निर्धन तथा कुलीन-अकुलीन का विवाद होता आया है। ऐसी विसंगतीयां देश और समाज के विकास को अवरुद्ध करती है। ऐसे समय में हमें आपस में जूझने और दूसरों को नष्ट करने के बजाए एक दूसरे को सहारा और बल देते रहेने की प्रक्रिया को अपनाना होगा और यह प्रक्रिया हमारे भीतर के अंतरमन और आत्मा से रूपांतरित होती है जिसके मन में अपने देश के पुराने गौरवशाली इतिहास पर अभिमान है और जो पुनः अपने देश भारत को सम्मान पद देखना पसंद करता है जिसका हख हिन्दुस्थान की अपने धर्म आचार दर्शन इतिहास और संस्कृति पुरानी परंपराओं के चलते हासिल है। उन्हें यह करना ही होगा। हमें हमेशा याद रखना चाहिये कि यदि हमारा देश संसार का प्राचीनतम देश है। हम सर्वथा नवीन राष्ट्र नहीं है। रामायण और महाभारत युग की पुरानी कहानी छोड़ भी दे तो भी आर्य साम्राज्य कि ही उत्तरी और पश्चमी सीमा सर्वमान्य है। प्रसिद्ध इतिहासकार के विचार में -

"२००० साल से भी अधिक हुए भारत के सम्राट चन्द्रगुप्त मौर्य ने भारत की उस वैज्ञानिक सीमा को प्राप्त कर लिया था जिसके तहद ब्रिटिश उत्तराधिकारी व्यर्थ ही में आहें भरते रहें और जिसे १६ वी तथा १७ ही शताब्दी के मुगल सम्राटों ने भी पूर्णता से प्राप्त नहीं किया।

२) **जन सामान्य में राष्ट्रीय चेतना :-** हिन्दुस्तान की बार-बार गुलामी का कारण इस देश के राजाओं की फूट नहीं है, फूट तो न जाने कितने और देशों के नेताओं ने भी किन्तु वहां की जनता चैतन्य रहीं है। भारत की जनता दासीन रही है। यहा हमारी कमज़ोरी रही है और हिन्दुस्तान की गुलामी का सबसे बड़ा कारण रहा है। यह बहुत मोटी बात है लेकिन उसको गाँव-गाँव में ऐक-एक आदमी के दिमाग में बैठाना आसान काम नहीं है। इसके पीछे इतिहास का सम्पूर्ण और अच्छा ज्ञान होना चाहिए।

"यह एक सच्चाई है कि हमारा देश जितना प्राचीन और कोई देश नहीं है, लेकिन यह भी सच्चाई है कि हजार वर्ष तक कोई और देश गुलाम भी नहीं रहा।"

-डॉ० राममनोहर लोहिया

डॉ० लोहिया के अनुसार भारत की लम्बी गुलामी का कारण यहाँ की जनता का औदासीन्य भाव है। जनता की उदासीनता की तह तक पहुँचने पर इसका अकेला सबसे बड़ा कारण उनके अनुसार जातिप्रथा है। इसने हिन्दुस्तान के ९० प्रतिशत लोगों को सार्वजनिक जीवन से बहिष्कृत कर दिया है। इनका काम मिट्टी खोदना, बाल बनाना, कपड़ा धोना, अन्न पैदा करना और तरकारी बोना है। राज-काज के लिए कोई प्रधानमंत्री या मुख्यमंत्री का बेटा-बेटा, पत्नी उसका नाते-रिश्तेदार ही राज्य करेगा। जनता के बीच का आदमी, उसका अपना आदमी, उसके लिए संघर्ष करने वाला आदमी क्यों नहीं ? पुराना राजतन्त्र चला गया। प्रजातंत्र या लोकतंत्र में यह कैसा अभिनव राजतंत्र है ? हमारी मानसिक गुलामी का और सब प्रकार से पिछड़े रह जाने का यह एकमात्र कारण है। एक कुदृष्टि सरकार के अन्दर फैली हुई है। आज कुशल मंत्री कौन है ? कुशल मंत्री वह नहीं जो देश की पैदावार

बढ़ाये। कुशल मंत्री वह है जो अमेरिका, ब्रिटेन और यूरोप के देशों से भारत के लिए कर्जा लाये। भारत पर कर्जा का आलम यह है कि लगभग पाँच लाख करोड़ का विदेशी ऋण भारत पर है, जिसका ब्याज चुकाने पर ही लगभग ९० हजार करोड़ रुपया प्रति वर्ष खर्च करना पड़ता है। पिछले हजार वर्ष के भारतीय चरित्र को समझाने के लिए एक वाक्य काफी है कि एक हल्दीघाटी है तो पचास या सौ प्लासी हैं। हल्दीघाटी वह जगह है जहाँ राणाप्रताप के करीब-करीब आखिरी सिपाही तक ने लड़ाई की थी और प्लासी वह जगह है जहाँ पर अंग्रेजों के केवल दो चार हजार सिपाही थे और हमारे सिपाही ४०-५० हजार थे, फिर भी हम लड़ाई हार गये। इसका कारण यह था कि राष्ट्रीय चरित्र हमारा पोला हो गया था। अगर हमारे लिये लड़ने वाला सिराजुद्दौला जैसा वीर था तो देश द्रोह की घिनौनी हरकत करने वाला मीर जाफर भी था। मीर जाफर ही क्या ? हम तो कहेंगे कि उस समय हमारा राष्ट्रीय चरित्र ही समाप्त हो गया था। प्लासी के विजेता लार्ड क्लाइव ने उस समय अपने एक मित्र को पत्र में लिखा था-"जब हमने नवाब सिराजुद्दौला को परास्त कर मुर्शिदाबाद में प्रवेश किया तो मेरे पास मात्र ७०० सैनिक थे और तमाशा देखने वाले भारतीयों की संख्या लाखों में थी। अगर उन्होंने एक-एक पत्थर उठाकर हम पर फेंका होता तो हम सब समाप्त हो गये होते।" किन्तु ऐसा नहीं हुआ। आज भी स्थिति लगभग उसी तरह है। हम लोग भीरु हैं, अड़ना नहीं जानते। जल्दी से हार मान लेते हैं। कई बार तो लड़ाई शुरू होने के पहले ही हार मान लेते हैं। साधारण जनता का यह स्वभाव बन गया है कि वह गज-ग्राह की लड़ाई में जिस प्रकार विष्णु ने आकर गज की रक्षा की ऐसा ही हम अपनी समस्या, अपनी लड़ाई का समाधान

और त्राण किसी बाहरी नेता, भगवान् या अलम्बरदार के भरोसे करना चाहते हैं। हमें अपनी समस्या का समाधान पाने के लिए, न्याय के लिए हममें स्वयं परिश्रम करने, संगठन बनाने, लड़ाई लड़ने, मार खाने, जेल जाने, मरने और मारने वाली भावना बहुत कम है। हमें यह याद रखना होगा कि देशकी आजादी स्वतन्त्रता संग्राम के राष्ट्रीय आन्दोलन में इन्हीं कार्यों को करने से प्राप्त हुई है। स्वराज्य को सुराज्य में बदलने के लिए फिर से हमें वही सब कुछ करना होगा।

३. **राष्ट्रीय शील की रक्षा** - आज बच्चों को संस्कार माता-पिता, परिवार और गुरुजनों से नहीं रेडियो, टी.वी. के गतों, कार्यक्रमों और उनके द्वारा उत्पन्न सम्मोहन से मिल रहे हैं। मनोरंजन के बहाने घरों की शालीनता, नैतिकता और सामाजिक मान्यताओं को रौंदा जा रहा है। वस्तुओं और फिल्मों को बेचने के लिए नारी को भावनाशील इंसान के बजाय संयम और अनुशासन तोड़ने का यंत्र बना दिया है, जिनके सौजन्य से यह मनोरंजन घर-घर मुफ्त में दिया जा रहा है। वह कम्पनियाँ अपना सामान बेचने के लिठए इन्द्रियों पर लगाम रखने की संस्कृति पर ही दिन-रात चोट कर रही हैं। प्रोग्राम में बड़े-छोटों को फँसाने के लिए मारुति गाड़ी, हवाई टिकट, विदेशों की सैर के प्रलोभन दिये जाते हैं। दूरदर्शन और सैटेलाइट टी.वी. की देखा-देखी समाचारपत्र भी अब जनतन्त्र का चौथा खण्भा नहीं, बल्कि 'बाजारु संस्कृति' का खम्भा बन चुका है। इतना ही नहीं इन बहुराष्ट्रीय कम्पनियों ने कॉलेजों के उत्सवों, फैशन शो, सौन्दर्य प्रतियोगिताठओं के माया जाल द्वारा भी भारतीय सांस्कृतिक जीवन को विकृत किया है। विदेशी मॉडलों और पॉप स्टार के भैंड़े तमाशों ने हमें शर्म से जमीन में गाड़ दिया है। एड्स के नाम प, क्योंकि हजारों करोड़ों रुपये विदेश से आ जाते हैं, उनके इशारों पर समाचार-पत्र, परावैवाहिक-सम्बन्धों (व्यभिचार) को मर्यादित करने में लग जाते हैं। वेश्यावृत्ति को उद्योग माना जाये, इसके लिए बुलाये गये सम्मेलन को आशीर्वाद देने भारत के गृहमंत्री तक चले जाते हैं और कहीं कोई विरोध नहीं। ऐसे वातावरण में क्या कोई अपने बच्चों को केवल निजी प्रयत्नों से बचा पायेगा ? जबकि सभी राजनीतिक दल विदेशी कम्पनियों की चाटुकारिता में देश की अस्मिता मिटाने में लगे हैं। राष्ट्रीय संकट की ठइस घड़ी में सच्चे देशभक्तों का यह कर्त्तव्य बनता है कि बच्चों को इस मीठे जहर से बचाने और नारी की गरिमा की रक्षा के लिए आगे आयें, सांस्कृतिक राष्ट्रवाद की चेतना जन-जन में फैलायें। सभी बड़े शहरों में राषट्रीय शील की रक्षा के लिए विशाल रैलियाँ निकालनी पड़ेगी। सभी राजनीतिक दलों, उनके सांसदों और मन्त्रियों को पत्र द्वारा तथा प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष तरीकों से राष्ट्रीय चरित्र के प्रति उनकी जिम्मेदारी तय करनी होगी। जिला-हाईकोर्ट व सुप्रीम कोर्ट में फिल्मी अश्लील पोस्टरों, अश्लील टी.वी. प्रोग्राम तथा कोकाकोला आदि के अश्लील पोस्टरों के विरुद्ध अनेक मुकदमें लड़ने पड़ेंगे।

४. **आचार सम्बन्धी शुद्धता** - आचार सम्बन्धी शुद्धता चरित्र का पहला अंग है। परुष और स्त्री दोनों निर्दोष निज-जीवन व्यतीत करें, समाज द्वारा सम्मत और न्याय से अनुमोदित सीमाओं का उल्लंघन न करें और विषय-वासना की पूर्ति को अपने जीवन का लक्ष्य न बनायें, यह चरित्र का बुनियादी रूप है। चरित्र का दूसरा रूप यह है कि राष्ट्र के व्यक्तियों में राष्ट्र के प्रति अगाध प्रेम हो, जिसके कारण वह किसी बड़े से बड़े प्रलोभन या भय के असर में आकर भी राष्ट्र के साथ द्रोह न कर सकें। कभी-कभी राजनीति के व्याख्याकार कह दिया करते हैं कि राजनीतिक नेताओं के निज-चरित्र का राष्ट्र की भलाई-बुराई से कोई सम्बन्ध नहीं है, किन्तु अनुभव ने सिद्ध किया है कि यह विचार ठीक नहीं है। प्रत्येक राजनीतिक आन्दोलन अथवा प्रत्येक राष्ट्रीय-संघ की सफलता उसके सभी सिपाहियों और विशेषतः उसके नेताओं के चरित्र बल पर अवलम्बित रहती है। अमेरिका को इंग्लैण्ड की दासता से छुड़ाने के जो कारण थे, उनमें उसके सेनापति वाशिंगटन का निर्दोष और दृढ़ चरित्र एक प्रमुख कारण था। उस समय के अमेरिकन लोग भी प्रायः सत्य और स्वाधीनता-प्रेमी सिपाही होते थे, वह आजकल के ऐश्वर्य और विकास की सामग्री से सम्पन्न चिकने चुपड़े अमेरिकनों से वहुत भिन्न थे।

स्वतन्त्रता प्रेमी इंग्लैण्ड में क्रामवैल को राजनीतक क्रानित को सफल बना देने का जो श्रेय प्राप्त हुआ था, उसका सबसे बड़ा कारण भी क्रामबेल और उसके अनुयायी सिपाहियों का सच्चा निर्मल और अक्खड़ चरित्र ही था। विशाल मुगल साम्राज्य को गरीब मराठा सेनाओं ने छलनी कर दिया था। उसके अनुयायी सिपाहियों का सच्चा निर्मल और अक्खड़ चरित्र ही था। विशाल मुगल साम्राज्य को

गरीब मराठा सेनाओं ने छलनी कर दिया था। इसका मुख्य कारण ही था कि चिरकालीन वैभव ने मुगलों को चरित्रहीन और कायर बना दिया था। वहाँ सन्तों के प्रचार और शिवाजी के दृष्टान्त ने प्रारम्भिक मराठा योद्धाओ में सादगी, निर्भयता और दृढ़ता कूट-कूट कर भर दी थी। वर्तमान इहिास में जिस घटना को सबसे अधिक आश्चर्यजनक समझा जा सकता है, वह है केवल २० वर्ष में वर्साय की सद्विध द्वारा पददलित जर्मनी का पुन रुत्थान। इतिहासकारों के अनुसार जमी की प्रगति के नेता हिटलर का संकल्प और दृढ़ चरित्र ही इस चमत्कार का कारण था। अतः जिस राष्ट्र के विकास की बुनियाद चरित्र बल पर न हो वह या तो असामयिक गर्भ की तरह गिरकर नष्ट हो जाता है, अथवा पैदा होकर शैशव में ही मृत्यु का शिकार हो जाता है।

अतः Mudaliar Commission (मुदालियर कमीशन) ने १९५२-५३ में जो सुझाव व सिफारिशें दीं उनमें छात्रों के चरित्र निर्माण के प्रति बहुत ही बल दिया गया था।

५. साम्प्रदायिकता और जातिवाद से मुक्ति- एक स्वतन्त्र सम्प्रभुता स्पन्न राष्ट्र की अवधारणा के तीन प्रमुख तत्त्व हैं- (१) भौगोलिक भू-भाग, (२) जनसंख्या, (३) सम्प्रभुता

भौगोलिक भू-भाग से प्रेम करने वाला, किन्तु देश की जनसंख्या के भागविशेष से घृणा करने वाला छद्म राष्ट्रवादी है। देश की पूरी जनसंख्या से समान भाव से वर्ग, जाति, धर्म, लिंग तथा क्षेत्र विशेष का भेदभाव छोड़कर प्रेम करने वाला ही सच्चा राष्ट्रवादी हो सकता है। हमारे विद्यालयों में विद्या के विविध विषय पझये जाते हैं, जातिवाद कहीं पढ़ाया नहीं जाता, फिर भी हमारे देश की सामाजिक समसं में एक प्रमुख समस्या जातिवाद की है। हम अपने सामाजिक, राजनीतिक तथा दैनन्दिन जीवन में जातिवाद को एक गहरे रूप में देखते हैं। अतः यह जानना आवश्यक है कि जातिवाद को हम कहाँ पढ़ते हैं ? और किस स्थान से उसको ग्रहण करते हैं ? निश्चय ही हम अपने जीवन की पाठशाला में जातिवाद की शिक्षा प्राप्त करते हैं। देश की जनता के किसी जात-विशेष के प्रति हम अपने रागात्मक भाव को रखते हैं, तो दूसरे जाति-विशेष की जनता के प्रति द्वेष-दृष्टि। निश्चय ही हमारी यह भावना और दृष्टि राष्ट्रीयता के खिलाफ है। हम सच्चे राष्ट्रवादी तभी बन सकते हैं जब हम जातिवाद पर प्रहार कर सकें। जातिवाद पर प्रहार करने वाला ही राष्ट्रवादी हो सकता है। इसी प्रकार सम्प्रदाय के आधार पर किसी सम्प्रदाय-विशेष से विशेष लगाव और दूसरे सम्प्रदाय विशेष की जनता से उपेक्षा या द्वेष का भाव रखने वाला राष्ट्रवादी नहीं हो सकता। अतः साम्प्रदायिकता पर प्रहार करने वाला व्यक्ति ही राष्ट्रवादी हो सकता है।

६. राष्ट्रीय स्वाभिमान- अपने देश के प्रति गहरे लगाव को ही 'राष्ट्रीय स्वाभिमान' कहते हैं। राष्ट्रीय स्वाभिमान ही राष्ट्रीयता की नींव है। वेदों के समय से ही हमारे राष्ट्र में मातृभूम के प्रति गहरे लगाव की बात कही जाती रही है। जब ऋग्वेद के ऋषि ने यह कहा-

'उप सर्प मातरं भूमिम्' -ऋ०१०।१८।१०

हे मनुष्य ! तू मातृ भूमि की सेवा कर तथा जब अथर्ववेद के द्रष्टा ऋषि ने कहा था-

'माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः'।

भूमि मेरी माता है र मैं उसका पुत्र हूँ, तब वैदिक ऋषि अपनी मातृभूमि के प्रति गहरे लगाव को ही ध्वनित कर रहे थे। मातृभूमि के प्रति हमारे हृदय में ऐसा ही गहरा लगाव और ऐसा ही गहरा स्नेह होना चाहिए। माता के प्रति पुत्र का जो अहैतुक स्नेह होता है वैसा ही स्नेह अपने राष्ट्र के प्रति हमारा होना चाहिए। इसमें वर्ण-जाति, धर्म सम्प्रदाय, भाषा-क्षेत्र को बाधक नहीं बनने देना चाहिए। यही कारण है कि हमारे पूर्वजों ने भारत-भूमि को भारतमाता की संज्ञा दी है, भारत राष्ट्र को देवता माना है -

'अस्त्युत्तरस्यां दिशि देवतात्मा हिमालयो नाम नगाधिराजः' -महाकवि कालिदास

हमारी मातृभूमि जमीन का टुकड़ा मात्र नहीं है। यह एक चैतन्यशक्ति है, देवी है, माता है **'वन्दे मातरम्'** कहकर इसी भारतमाता को श्री बंकिमचन्द्र चटर्जी अपना प्रणाम निवेदित करते हैं। वन्दे मातरम् का उद्घोष करके क्रान्तिवीर भगतसिंह, बिस्मिल, राजगुरु, सुखदेव, खुदराम बोस, प्रभृति सैकड़ों भारतमाता के अमर सपूत फँसी के फन्दे को चूमलेते है। स्वतन्त्रता प्राप्ति के पूर्व राष्ट्रीय चेतना के जागृत होने पर भारत में राष्ट्रीय स्वाभिमान का ऐसा भाव व्यास हुआ, जिसके परिणामस्वरूप हिन्दू, मुसलमान, सिक्ख, ईसाई, बौद्ध, जैन सभी भाई-भाई की तरह मातृभूमि के लिए अपने जीवन का उत्सर्ग कर रहे थे। राष्ट्रीय चेतना की यह लहर पूरे भारतवर्ष मे पूर्व से पश्चिम तक को तथा उत्तर से दक्षिण तक को एक साथ आन्दोलित कर रही थी। किन्तु आज वह अखण्ड राष्ट्रीय चेतना और राष्ट्रीय स्वाभिमान लुप्त होता जा रहा है। हमारी दृष्टि संकुचित होती जा रही है। ऐसे समय में राष्ट्रीयता की नींव 'राष्ट्रीय स्वाभिमान' को जागृत किये बिना भारत के विकास कीं कल्पना नहीं की जा सकती है।

निष्कर्ष- राष्ट्रपिता विश्ववन्द्य महात्मा गाँधी की स्मृति में 'गाँधी स्मारक' नई दिल्ली में राष्ट्रीय चरित्र की दृष्टि से निम्नांकित उल्लेख अति महत्त्वर्पू हैं। इसमें सात प्रकार के पाप गिनाये गये हैं-

१. नैतिक मूल्यों का पालन किये बिना किये जाने वाले व्यापार (Commerce without ethic)
२. अन्तरात्मा के विरुद्ध भोग-विलास (Pleasure without conscience)
३. सिद्धान्तहीन रानीति (Politics without principles)
४. सिद्धान्तहीन राजनीति (Knowledge wthout character)
५. चरित्रनिर्माण के बिना शिक्षण (Science without humanity)
६. त्यागरहित भक्ति (Worship without sacrify)
७. बिना परिश्रम के धन का अर्जन (Wealth without work)

गाँधीजी की शपथ लेकर सत्ता में आने वाले राजनीतिज्ञो ने इन पापों को बढ़ाने का ही कार्य किया है। इनसे मुक्ति के बिना हमारे राष्ट्रीय चरित्र का निर्माण नहीं हो सकता। महर्षि मनु के शब्दों में हमारे देश का लक्ष्य यह होना चाहिए

एतद्देश प्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मनः।
स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्वमानवाः॥

-मनुस्मृति २।२०

लेखिका, पं. ज्वलन्तकुमार शास्त्रीजी बरेली की सुपुत्री है

स्वास्थ्य के नुसखे

पानी में गुड डालिए, बीत जाए जब रात!
सुबह छानकर पीजिए, अच्छे हों हालात!!

'धनिया की पनी मसल, बूंद नैन में डार!'
दुखती अखियां ठीक हों, पल लागे दो–चार!!

'र्जा मिलती है बहुत, पिएं गुनगुना नीर!'
कब्ज खतम हो पेट की, मिट जाए हर पीर!!

'धतः काल पानी पिएं, घूंट–घूंट कर आप!'
बस दो–तीन गिलास है, हर औषधि का बाप!!

'ठंडा पानी पियो मत, करता क्रूर ध्हार!'
करे हाजमे का सदा, ये तो बंटाढार!!

'भोजन करें धरती पर, अल्थी पल्थी मार!'
चबा–चबा कर खाइए, वैद्य न झांकें द्वार!!

'धतः काल फल रस लो, दुपहर लस्सी–छांस!'
सदा रात में दूध पी, सभी रोग का नाश!!

'धतः– दोपहर लीजिये, जब नियमित आहार!'
तीस मिनट की नींद लो, रोग न आवें द्वार!!

'भोजन करके रात में, घूमें कदम हजार!'
डाक्टर, ओझा, वैद्य का , लुट जाए व्यापार !!

'घूट–घूट पानी पियो, रह तनाव से दूर!'
एसिडिटी, या मोटापा, होवें चकनाचूर!!

'अर्थराइज या हार्निया, अपेंडिक्स का त्रास!'
पानी पीजै बैठकर, कभी न आवें पास!!

'र०चाप बढने लगे, तब मत सोचो भाय!'
सौगंध राम की खाइ के, तुरत छोड दो चाय!!

'सुबह खाइये कुवंर–सा, दुपहर यथा नरेश!'
भोजन लीजै रात में, जैसे रंक सुजीत!!

'देर रात तक जागना, रोगों का जंजाल!'
अपच, आंख के रोग सेग, तन भी रहे निढाल''

'दर्द, घाव, फोडा, चुभन, सूजन, चोट पिराइ!'
बीस मिनट चुंबक धरौ, पिरवा जाइ हेराइ!!

धर्मग्रंथ बड़ा है कि राष्ट्रग्रंथ ?

डॉ. वेदध्ताप वैदिक

तीन तलाक के बारे में हमारे सर्वोच्च न्यायालय ने अभी जो शुरुआती विचार रखा है, उसी पर देश के विचारकों को खुली बहस चलाने की जरुरत है। अदालत ने कहा है कि वह सिर्फ तीन तलाक के मुद्दे पर विचार करेगी और यह देखेगी कि कुरान में उसका समर्थन है क्या? यदि कुरान तीन तलाक को ठीक मानती है और यदि मुसलमानों का यह ध्‍ार्मिक मौलिक अधिकार है तो उसमें वह हस्तक्षेप नहीं करेगी। यहां बड़ा सवाल यह है कि यदि ध्‍ार्मिक कानून और संवैधानिक कानून में टक्कर हो जाए तो आप किस कानून को मानेंगे? संविधान बड़ा या धर्मग्रंथ? धर्मग्रंथ बड़ा है कि राष्ट्रग्रंथ ? किसी अदालत की हिम्मत नहीं कि वह इस सवाल को इस अदा से उठाए ! यहां प्रश्न यह है कि सैकड़ों–हजारों साल पहले बने धर्मग्रंथों और स्मृतियों के कानूनों को आज के जमाने में क्यों माना जाए और आंख मींचकर क्यों माना जाए? उन्हें तर्क की तुलना पर क्यों न तौला जाए? उन्हें देश और काल के पैमाने पर क्यों नहीं नापा जाए? यदि ये मजहबी कानून परमपूर्ण होते तो दुनिया के देशों को संविध‍ान बनाने की जरुरत ही क्यों पड़ती? मजहब तो मुश्किल से दुनिया में दर्जन भर हैं लेकिन संविधान तो २०० से भी ज्यादा बन चुके हैं। यह मानकर क्यों चला जाए कि सारी अक्ल का ठेका हमारे पूर्वजों को मिला हुआ था और हम सब लोग निरा बेवकूफ हैं ? इसका अर्थ यह नहीं कि धार्मिक कानूनों और परंपराओं को हम उठाकर ताक पर रख दें। मेरा निवेदन सिर्फ इतना ही है कि उनमें से जो–जो प्रावधान आज भी उपयोगी हैं और सर्वहितकारी हैं, उन्हें जरुर बचाया जाए और माना जाए लेकिन जो भी प्रावधान बोझिल हैं, अनुपयोगी हों, पोंगापंथी हों, अप्रासंगिक हों, उन्हें तुरंत छोड़ा जाए। तीन तलाक या बहुविवाह या जातीय ऊंच–नीच या छुआछूत जैसी गई–गुजरी बातों को क्या हमें सिर्फ इसीलिए मान लेना चाहिए कि वैसा कुरान

'सनर रोगों को करे, चूना हमसे दूर!'
दूर करे ये बाझपन, सुस्ती अपच हुजूर!!

'भोजन करके जोहिए, केवल घंटा डेढ!'
पानी इसके बाद पी, ये औषधि का पेड!!

'अलसी, तिल, नारियल, घी सरसों का तेल!'
यही खाइए नहीं तो, हार्ट समझिए फेल!

'पहला स्थान सेंधा नमक, पहाड़ी नमक सु जान!'
श्वेत नमक है सागरी, ये है जहर समान!!

'अल्यूमिन के पात्र का, करता है जो उपयोग!'
आमंत्रित करता सदा, वह अडतालीस रोग!!

'फल या मीठा खाइके, तुरत न पीजै नीर!'
ये सब छोटी आंत में, बनते विषधर तीर!!

'चोकर खाने से सदा, बढती तन की श०ि!'
गेहू मोटा पीसिए, दिल में बढे विर०ि!!

'रोज मुलहठी चूसिए, कफ बाहर आ जाय!'
बने सुरीला कंठ भी, सबको लगत सुहाय!!

'भोजन करके खाइए, सौंफ, गुड, अजवान!'
पत्थर भी पच जायगा, जानै सकल जहान!!

'लौकी का रस पीजिए, चोकर यु० पिसान!'
तुलसी, गुड, सेंधा नमक, ह्मदय रोग निदान!

'चौत्र माह में नीम की, पनी हर दिन खावे !'
ज्वर, डेंगू या मलेरिया, बारह मील भगावे !!

'सौ वर्षों तक वह जिए, लेते नाक से सांस!'
अल्पकाल जीवें, करें, मुंह से श्वासोच्छ्वास!!

'सितम, गर्म जल से कभी, करिये मत स्नान!'
घट जाता है आत्मबल, नैनन को नुकसान!!

'ह्मदय रोग से आपको, बचना है श्रीमान!'
सुरा, चाय या कोल्ड्रिंक्स, का मत करिए पान!!

'अगर नहावें गरम जल, तन–मन हो कमजोर!'
नयन ज्योति कमजोर हो, श०ि घटे चहुंओर!!

'तुलसी का पना करें, यदि हरदम उपयोग!'
मिट जाते हर उम्र में, तन में सारे रोग

प्रभु से विनम्र निवेदन

इतनी ऊँचाई न देना प्रभु कि,
धरती पराई लगने लगे।!
इनती खुशियाँ भी न देना कि,
दुःख पर किसी के हंसी आने लगे!
नहीं चाहिए ऐसी शक्ति जिसका,
निर्बल पर प्रयोग करूँ!
नहीं चाहिए ऐसा भाव कि
किसी को देख जल–जल मरूँ!
ऐसा ज्ञान मुझे मत देना,
अभिमान जिसका होने लगे!
ऐसी चतुराई भी न देना जो,
लोगों को छलने लगे !

या पुराण या बाइबिल या गुरु ग्रंथ साहब या जिंदावस्ता या वेद में लिखा गया है? ये सब ग्रंथ अपनी व्याख्याओं के मोहताज हैं। सब लोग अपनी–अपनी पसंदगी के मतलब इनमें से निकाल लेते हैं। इन्हें ईश्वरकृत भी इसीलिए कहा जाता है कि लोग इनमें लिखी बातों को चबाए बिना ही निगल जाएं। जो निगलना चाहते हैं, जरुर निगलें। उन्हें पूरी छूट दी जाए लेकिन उस हर मुद्दे पर अदालतों और संसदों को बेखौफ फैसला देना चाहिए, जिसका संबंध दूसरों से हों, समाज से हो, राज्य से हो। कोई अपने गाल पर रोज सुबह सौ तमाचे लगाना चाहे तो जरुर लगाए, उसे आजादी है। लेकिन वह आदमी अपनी बीवी को यदि रोज एक लात मारना चाहे तो उसे यह आजादी नहीं मिल सकती। धर्मग्रंथ में पति परमेश्वर है तो वह रहे लेकिन राष्ट्रग्रंथ में वह वैसा ही नागरिक माना जाता है जैसी कि उसकी पत्नी है। अपने व्यक्तिगत मामलों में आप अपने धर्मग्रंथ को सर्वोच्च मानते रहिए लेकिन बाकी सभी मामलों में राष्ट्रग्रंथ को ही सर्वोच्च मानना जरुरी है।

जाति मिटे तो गरीबी हटे

-वेदप्रताप वैदिक

जातीय गणना के इरादे को देश सफल चुनौती दे रहा हैद्य जबसे 'सबल भारत' ने 'मेरी जाति हिंदुस्तानी' आंदोलन छेड़ा है, इसका समर्थन बढ़ता ही चला जा रहा हैद्य देश के वरिष्ठतम नेता, न्यायाधीश, विधि ाशास्त्री, विद्वान, पत्र्कार, समाजसेवी और आम लोग भी इससे जुड़ते चले जा रहे हैंद्य इसमें सभी प्रांतों, भाषाओं, जातियों, धर्मों और धंधों के लोग हैद्य ऐसा नहीं लगता कि यह मुट्ठीभर बुद्धिजीवियों का बुद्धि-विलास भर हैद्य

दूसरी खुशी यह है कि जो लोग हमारे आंदोलन का विरोध कर रहे हैं, वे भी यह बात बराबर कह रहे हैं कि वे भी जात-पांत विरोधी हैंद्य वे जन-गणना में जाति को इसीलिए जुड़वाना चाहते हैं कि इससे आगे जाकर जात-पांत खत्म हो जाएगीद्य कैसे खत्म हो जाएगी, यह बताने में वे असमर्थ हैंद्य जातीय जन-गणना के पक्ष में जो तर्क वे देते हैं, वे इतने कमजोर हैं कि आप उनका जवाब न दें तो भी वे अपने आप ही गिर जाते हैंद्य फिर भी उन सज्जनों के साहस की दाद देनी होगी कि वे जातिवाद की खुले-आम निंदा कर रहे हैंद्य

जन-गणना में जात को जोड़ना ऐसा ही है, जैसे बबूल का पेड़ बोना और उस पेड़ से आम खाने का इंतजार करना ! हर व्यक्ति से जब आप उसकी जात पूछेंगे और उसे सरकारी दस्तावेजों में दर्ज करेंगे तो क्या वह अपनी जात हर जगह जताने के लिए मजबूर नहीं किया जाएगा ? उसकी व्यक्तिशरू पहचान तो दरी के नीचे सरक जाएगी और उसकी जातिशरू पहचान गद्ददी पर जा बैठेगीद्य क्या पाठशाला-प्रवेश, क्या नौकरी, क्या पदोन्नति, क्या यारी दोस्ती, क्या काम-धंधा, क्या राजनीति, क्या सामाजिक-जीवन सभी दूर लोगों को क्या उनकी जात से नहीं पहचाना जाएगा और क्या वही उनके अस्तित्व का मुख्य आध ार नहीं बन जाएगी ? आज भी जात खत्म नहीं हुई हैद्य वह है, लेकिन उसका दायरा शादी-ब्याह तक सिमट गया हैद्य अब दफ्तर, रेल, अस्पताल या होटल में कोई किसी की जात नहीं पूछताद्य सब सबके हाथ का खाना खाते हैं और शहरों में अब शादी में भी जात के बंधन टूट रहे हैंद्य यदि जन-गणना में हम जात को मान्यता दे देंगे तो दैनंदिन जीवन में उसे अमान्य कैसे करेंगे ? जन-गणना में पहुंचकर वह घटेगी या बढ़ेगी ?

शादी के अलावा जात अगर कहीं जिंदा है तो वह राजनीति में हैद्य जब राजनीतिक दलों और नेताओं के पास अपना कोई शानदार चरित्् नहीं होता, सिद्घांत नहीं होता, व्यक्तित्व नहीं होता, सेवा का इतिहास नहीं होता तो जात ही उनका बेड़ा पार करती हैद्य जात मतदाताओं की बुद्घि हर लेती हैद्य वे किसी भी मुद्दे का र्निणय उचित-अनुचित या शुभ-अशुभ के आधार पर नहीं, जात के आधार पर करते हैंद्य जैसे भेड़-बकरियां झुंड में चलती हैं वैसे ही मतदाता भी झुंड-मनोवृत्ति से ग्रस्त हो जाते हैंद्य दूसरे अर्थों में राजनीतिक जातिवाद मनुष्यों को मवेशी बना देता हैद्य क्या यह मवेशीवाद हमारे लोकतंत्् को जिंदा रहने देगाद्य जातिवाद ने भारतीय लोकतंत्् की जड़ें पहले से ही खोद रखी हैंद्य अब हमारे जातिवादी नेता जन-गणना में जाति को घुसवाकर हमारे लोकतंत्् को बिल्कुल खोखला कर देंगेद्य जैसे हिटलर ने नस्लवाद का भूत जगाकर जर्मन जनतंत्् को खत्म कर दिया, वैसे ही हमारे जातिवादी नेता भारतीय लोकतंत्् को तहस-नहस कर देंगेद्य नस्लें तो दो थीं, जातियां तो हजारों हैंद्य भारत अगर टूटेगा तो वह शीशे की तरह टूटेगाद्य उसके हजारों टुकड़े हो जाएंगेद्य वह ऊपर से एक दिखेगा लेकिन उसका राष्ट्र भाव नष्ट हो जाएगाद्य नागरिकों के सामने प्रश्न खड़ा होगा-राष्ट्र बड़ा कि जात बड़ी ? यह कहनेवाले कितने होंगे कि राष्ट्र बड़ा है राष्ट्र बड़ा !

दलितों और पिछड़ों के जातिवादी नेताओं को यह गलतफहमी है कि जातिवाद फैलाकर वे बच निकलेंगेद्य वे क्यों भूल जाते हैं कि उनकी हरकतें जवाबी जातिवाद को जन्म देंगी ? जन-गणना के सवाल पर ही यह प्रक्रिया शुरू हो गई हैद्य कई सवर्ण नेताओं ने मुझे गुपचुप कहा कि जातीय गणना अवश्य होनी चाहिए, क्योंकि उससे बहुत से जाले साफ हो जाएंगेद्य सबसे पहले तो यह गलतफहमी दूर हो जाएगी कि देश में सवर्ण लोग सिर्फ १५ प्रतिशत हैंद्य ताजातरीन राष्ट्रीय सेम्पल सर्वे के अनुसार सवर्णों की संख्या लगभग ३५ प्रतिशत है और पिछड़ी जातियों की ४१ प्रतिशत ! यदि इन जातियों में से 'मलाईदार परतों' को अलग कर दिया जाए और वास्तविक गरीबों को गिना जाए तो उनकी संख्या शायद सवर्णों से भी कम निकलेद्य ऐसी हालत में उन्हें अभी जो आरक्षण मिल रहा है, उसे घटाने की मुहिम चलाई जाएगीद्य १६३१ की अंतिम जातीय गणना ने तथाकथित पिछड़ी जातियों की संख्या ५२ प्रतिशत बताई थीद्य इसी आध

ाार पर उन्हें २७ प्रतिशत आरक्षण मिल गयाद्य तो क्या अब उसे घटाकर २० या २२ प्रतिशत करना होगा ? इसके अलावा जातीय जनगणना हुई तो आरक्षण प्राप्त जातियों में जबर्दस्त बंदरबांट शुरू हो जाएगीद्य सभी जातियों के अंदर उप-जातियां और अति-उपजातियां हैंद्य वे भी अपना हिस्सा मांगेंगीद्य जो नेता जातीय गणना की मांग कर रहे हैं, उनके छक्के छूट जाएंगे, क्योंकि उनकी प्रभावशाली खापों के विरूद्घ बगावत हो जाएगीद्य उनकी मुसीबत तब और भी बढ़ जाएगी, जब जाट और गूजर जैसी जातियां सारे भारत में आरक्षण के लिए खम ठोकने लगेगींद्य उच्चतम न्यायालय ने आरक्षण की सीमा ५० प्रतिशत बांध रखी हैद्य इस ५० प्रतिशत को लूटने-खसोटने के लिए अब ५०० से ज्यादा जातीय दावेदार खड़े हो जाएंगेद्य अगर जातीय गणना हो गई तो आरक्षण मजाक बनकर रह जाएगाद्य कौन नहीं चाहेगा कि उसे मुफ्त की मलाई मिल जाए ? जातीय गणना निकृष्ट जातिवाद को पनपाएगी द्य जो वास्तव में गरीब हैं, उन्हें कोई नहीं पूछेगा लेकिन जिन जातियों के पास संख्या-बल और डंडा-बल है, वे मलाई पर हाथ साफ करेंगी ? इस लूट-खसोट में वे मुसलमान और ईसाई भी तत्पर होना चाहते हैं, जो जातीय-अभिशाप से बचने के लिए धर्मातंरित हुए थेद्य

जो लोग जातीय गणना के पक्षधर हैं, उनसे कोई पूछे कि आप आखिर यह चाहते क्यों हैं ? आप गरीबी हटाना चाहते हैं या जात जमाना चाहते हैं ? यदि गरीबी हटाना चाहते हैं तो गरीबी के आंकड़े इकट्रठे कीजिएद्य यदि गरीबी के आंकड़े इकट्रठे करेंगे तो उसमें हर जात का गरीब आ जाएगाद्य कोई भी जात नहीं छूटेगी लेकिन सिर्फ जात के आंकड़े इकट्रठे करेंगे तो वे सब गरीब छूट जाएंगे, जिनकी जाति आरक्षित नहीं हैंद्य भारत में एक भी जात ऐसी नहीं है, जिसके सारे सदस्य गरीब हों या अमीर होंद्य जिन्हें हम पिछड़ा-वर्ग कहते हैं, उनके लाखों-करोड़ों लोगों ने अपने पुश्तैनी काम-धंधे छोड़ दिए हैंद्य उनका वर्ग बदल गया है, फिर भी जात की वजह से हम उन्हें पिछड़ा मानने पर मजबूर किए जाते हैंद्य क्या आंबेडकर, क्या अब्दुल कलाम, क्या के.आर. नारायण, क्या मायावती, क्या मुलायमसिंह, क्या लालू पिछड़े हैं ? ये लोग अगड़ों से भी अगड़े हैंद्य क्या टाटा को कोई लुहार कहता है ? क्या बाटा को कोई चमार कहता है ? क्या कमोड बनानेवाली हिंदवेंयर कंपनी को कोई भंगी कहता है ? लेकिन जातीय गणना चलाकर हम इतिहास के पहिए को पीछे की तरफ मोड़ना चाहते हैंद्य हर नागरिक के गले में उसकी जात की तख्ती लटकवाना चाहते हैंद्य २१ वीं सदी के भारत को हम पोंगापंथी और पीछेदेखू क्यों बनाना चाहते हैं ?

काका कालेलकर और मंडल आयोग के पास गरीबी के पूरे आंकड़े नहीं थेद्य इसीलिए उन्होंने सरल उपाय ढूंढाद्य जाति को आधार बनाया लेकिन यह आधार इतना अवैज्ञानिक था कि नेहरू और मोरारजी, दोनों ने इसे रद्द कर दियाद्य वि.प्र. सिंह ने इस अपना राजनीतिक हथियार बनायाद्य उनकी राजनीति तो कुछ माह के लिए संवर गई लेकिन समाज बिखर गयाद्य असली गरीबों को कोई खास लाभ नहीं मिलाद्य अब जबकि लाखों कर्मचारी हैं, कंप्यूटर हैं, विशेषज्ञ हैं, गरीबी के सही-सही आंकड़ें क्यों नहीं इकट्रठे किए जाते ? जात के अधूरे, असत्य और अवैज्ञानिक आंकड़े इकट्रठे करके आप कैसी नीति बनाएंगे, यह बताने की जरूरत नहीं हैद्य जिस जातीय गणना का विरोध १९३१ में गांधी, नेहरू और कांग्रेस ने किया और जिसे हमारे संविधान-निर्माताओं ने अनुचित माना, उस कैंसर के कीटाणु को अब राष्ट्र की ध मनियों में धंसवाने की कोशिश क्यों हो रही है ? क्या हम भूल गए कि ११ जनवरी १९३१ को राष्ट्रीय कांग्रेस ने 'जन-गणना बहिष्कार दिवस' मनाया था ?

जो लोग जातीय गणना के पक्षधर हैं, वे अनजाने ही देश के पिछड़े वर्गों, गरीबों और वंचितों का बंटाढार करवाने पर तुले हुए हैंद्य वे आरक्षण को अनंतकाल तक बनाए रखना चाहते हैंद्य देश के ६०-७० प्रतिशत लोग सदा अपाहिज बने रहें, सवर्णों की दया पर जिंदा रहे और आरक्षण की बेसाखियों के सहारे घिसटते रहें, यही उनकी गुप्त वासना हैद्य इस वासना के मूल में है, वोटों की राजनीति ! तीन-चौथाई भारत अपंग बना रहे तो बने रहे, हमें तो वह वोट देता रहेगाद्य डह. आंबेडकर खुद इस आरक्षण को दस साल से ज्यादा नहीं चलाना चाहते थे लेकिन अब साठ साल चलकर भी यह कहीं नहीं पहुंचा हैद्य देश की प्रथम श्रेणी की नौकरियों में आरक्षित पद खाली पड़े रहते हैंद्य अब तक केवल ४-५ प्रतिशत आरक्षित पद ही भरे जाते हैंद्य योग्यता का मानदंड ढीला कर देने पर भी यह हाल हैद्य हमारे जातिवादी नेता मूल में क्यों नहीं जाते ? वे हमारे देश के पिछड़ों के लिए किसी ऐसे आरक्षण का प्रावधान क्यों नहीं करते, जिसे पाकर वे अगड़ों से भी अधिक योग्य बनेंद्य किसी की दया पर जिंदा न रहेंद्य ऐसा आरक्षण नौकरियों में नहीं, शिक्षा में दिया जाना चाहिएद्य किसी जाति या मजहब के भेदभाव के बिना प्रत्येक वंचित के बच्चों को दसवीं कक्षा तक मुफ्त शिक्षा, मुफ्त आवास, मुफ्त भोजन और मुफ्त वस्त्र मुहैया करवाए जाएंद्य देखिए, सिर्फ दस साल में क्या चमत्कार होगाद्य भारत का नक्शा ही बदल जाएगाद्य यदि बच्चों को काम-धंधों का अनिवार्य प्रशिक्षण दिया जाए तो वे सरकारी बाबू क्यों बनना चाहेंगे ? जिस दिन

भारत में हाड़-तोड़ काम की इज्जत और लज्जत कुर्सीतोड़ काम के लगभग बराबर या ज्यादा हो जाएगी, उसी दिन इस देश में क्रांति हो जाएगीद्य समतामूलक समाज बनेगाद्य न कोई सवर्ण रहेगा और न अवर्ण ! द्विज और अद्विज में फर्क नहीं होगाद्य सभी द्विज होंगेद्य शिक्षा के गर्भ से दुबारा जन्मे हुए !

भारत का संविधान प्रतिज्ञा करता है कि वह भारत को जातिविहीन समाज बनाएगा लेकिन हमारे कुछ नेता संविधान को शीर्षासन कराने पर उतारू हैंद्य संविधान में 'जातियों' को संरक्षण या आरक्षण देने की बात कहीं भी नहीं कही गई हैद्य 'अनुसूचित जाति' शब्द का प्रयोग जरूर हुआ है लेकिन सबको पता है कि अनुसूचित नाम की कोई जाति भारत में नहीं हैद्य हरिजन, अछूत और दलित शब्द पर ज्यादातर लोगों को आपत्ति थीद्य इसीलिए अछूतों के लिए 'अनुसूचित जाति' शब्द का प्रयोग हुआद्य अस्पृश्यता को खत्म करने के लिए जैसे 'अनुसूचित जाति' शब्द का प्रयोग हुआ, वैसे ही हमने जातिवाद को खत्म करने के लिए 'मेरी जाति हिंदुस्तानी' शब्द का प्रयोग किया हैद्य संविधान में- 'पिछड़े वर्गों' के 'नागरिकों' के प्रति विशेष सुविधा की बात कही हैद्य थोकबंद जातियों की बात नहीं, जरूरतमंद नागरिकों की बात ! जातीय आधार पर थोक में रेवडिघ्यां बांटना संविधान का उल्लंघन तो है ही, यों भी उन सबका हक मारना भी है, जो सच में जरूरतमंद हैंद्य रेवडिघ्यां भी कितनी हैं ? हर साल पिछड़ों को यदि चार-पांच हजार नौकरियां मिल गईं तो भी क्या उन ७०-८० करोड़ लोगों का पेट भर जाएगा, जो २० रू. रोज पर गुजारा कर रहे हैं ? चार-पांच हजार के मुंह में लहलीपहप और ८० करोड़ के पेट पर लात, यही जातीय आरक्षण की फलश्रुति हैद्य यदि जातीय गणना के आधार पर आरक्षण ७० प्रतिशत भी हो गया तो किसका भला होगा ? सिर्फ मलाईदार परतों का ! जो नेता और नौकरशाह पिछड़ी जातियों के हैं, उनके 'शील और व्यसन' सवर्णों से भी ज्यादा गए-बीते हैंद्य वे अपनी जातियों से कट चुके हैंद्य जातीय गणना करवाकर वे अपनी जातियों के लोगों को अपनी ही तोप का भूसा बनाएंगेद्य वे अपने ही लोगों को ठगेंगे द्य वे संविधान और राज्य की मर्यादा का भी उल्लंघन करेंगेद्य संविध ाान और भारत गणराज्य सभी नागरिकों की समान सेवा और रक्षा के लिए बने हैं, न कि कुछ खास जातियों के लिए ! सबकी जातें गिनवाकर आप जातिविहीन समाज की रचना कैसे करेंगे, यह समझ में नहीं आताद्य हम भारत को जातिविहीन बनाने की बजाय जातियों का महाभारत तो नहीं बना देंगे ?

जातीय गणना के पक्षधर अपने समर्थन में अमेरिका का उदाहरण देने लगते हैंद्य जैसे कालों की गिनती हुई और उन्हें विशेष अवसर दिया गया, वैसे ही भारत में जातीय गणना हो ओर विशेष अवसर दिए जाएंद्य यह तुलना अज्ञान पर आधरित हैद्य अमेरिका के काले लोगों की तुलना भारत के अद्विजों से बिल्कुल नहीं की जा सकतीद्य भारत की अद्विज जातियां और द्विज जातियां भी ऊपर-नीचे होती रहती हैंद्य द्विज कब अद्विज और अद्विज कब द्विज बन जाते हैं, पता ही नहीं चलताद्य १९३१ के सेंसस कमिश्नर डह्. जे. एच. हट्रटन ने तो यहां तक कहा था कि एक ही समय में एक ही जाति एक ही प्रांत में द्विज और अद्विज दोनों हैद्य कई जातियों ने अपने आप को १९११ की जनगणना में चमार लिखाया थाद्य उन्हीं ने १९२१ में खुद को क्षत्रि्य और १९३१ में ब्राहमण लिखवा दियाद्य इसी तरह अंग्रेजों के जमाने में हुई जनगणनाओं में जातियों की संख्या कुछ सौ से बढ़कर हजारों में चली गईद्य जातीय गणना कभी वैज्ञानिक हो ही नहीं सकती, क्योंकि हर व्यक्ति अपनी जाति ऊंची बताता है या अपने जातीय मूल को ऊंचा बताता हैद्य उसे नापने का कोई वस्तुनिष्ट मापदंड है ही नहींद्य गरीबी का है, जाति का नहींद्य कालों की जाति पूछने की जरूरत कभी नहीं होतीद्य वह तो देखने से ही पता चल जाती हैद्य उनकी सिर्फ गरीबी पूछी गई और उसका इलाज किया गयाद्य इसी तरह भारत में हम जाति को भूलें और गरीबी को याद रखेंद्य जात को याद रखने से गरीबी दूर नहीं होगीद्य गरीब की जात क्या होती है ? वह तो खुद ही एक जात हैद्य भारत की जातियां प्राकृतिक नहीं हैद्य मनुष्यकृत हैंद्य वे जैसे पैदा की गई हैं, वैसे ही खत्म भी की जा सकती हैं लेकिन गोरे और काले का रंगभेद तो प्रकृत्तिप्रदत्त हैद्य इसीलिए रंगभेद और जातिभेद की तुलना नहीं की जा सकती, हालांकि काले और गोरे का भेद भी ऊपरी ही हैद्य सच्चाई तो यह है कि सारी मनुष्य जाति ही एक हैद्य यदि एक नहीं होती तो वह समान प्रसवात्मिका कैसे होती ? जैसे सवर्ण और अवर्ण स्त्री-पुरूष से संतान पैदा होती है, क्या गोरे और काले युग्म से नहीं होती ? काले और गोरे के भेद में भी मनुष्यता का अभेद छिपा हैद्य कोई गणना अगर मनुष्यों के बीच नकली और ऊपरी भेदों को बढ़ाए तो सभ्य समाज उसका स्वागत कैसे कर सकता है ?

जातीय जनगणना भारत को दुनिया के सभ्य समाज में बैठने लायक नहीं रहने देगीद्य अभी भारत दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्‌ 'माना जाता हैद्य जातीय जन-गणना के बाद उसे लोकतंत्‌ 'नहीं, जातितंत्‌ 'माना जाएगाद्य जन्म के आधार पर भेद-भाव करनेवाला भारत दुनिया का एक मात्‌ 'राष्ट्र होगाद्य कई रंगभेद विरोधी अंतरराष्ट्रीय सम्मेलनों में भारतीय प्रतिनिधियों को जातिभेद के कारण भयंकर लताड़ें खानी पड़ती हैंद्य लोकतंत्‌ 'में हर नागरिक समान होता है लेकिन

जातितंत्‍ में तो ऊँच-नीच का गगनचुंबी पिरेमिड उठ खड़ा होगाद्ययदि देश में १० हजार जातियां होंगी तो यह जातीय पिरेमिड १० हजार तल्लेवाला होगाद्य महाशक्ति के दर्जे पर पहुंचनेवाले भारत के लिए इससे बड़ा खतरा क्या होगा कि विदेशी शक्तियां इस जातीय विभाजन का इस्तेमाल अपनी स्वार्थ-सिद्िघ के लिए करेंगीद्य यह संयोग मात्‍ नहीं है कि भारत के विशेषज्ञ माने जानेवाले अनेक विदेशी समाजशार्स्त्र जातीय गणना के कट्टरटर वकील बन गए हैंद्य क्यों बन गए हैं ? वे कहते हैं कि भारत को जानने-समझने के लिए सही-सही आंकड़ें चाहिएद्य वे भारत को जानना-समझना क्यों चाहते हैं ? किसलिए चाहते हैं ? क्या इसलिए नहीं कि वे अपने-अपने राष्ट्रों के संकीर्ण स्वार्थों को सिद्ुघ करना चाहते हैं ? वे जातीय गणना के जरिए जातिवाद के उस जहर को दुबारा फैलाना चाहते हैं, जो १८५७ के बाद अंग्रेजों ने फैलाया थाद्य अंग्रेज ने प्रथम स्वाधीनता संग्राम के ठीक चार साल बाद जनगणना शुरू की और उसमें धीरे-धीरे मजहब और जात का जहर घोल दियाद्य १८७१ की जनगणना से जन्मी हंटर आयोग की रपट १६०५ के बंग-भंग का कारण बनीद्य मुसलमानों के बारे में इकट्रठे किए गए आंकड़ों का जो हश्र १६०५ और १६४७ में हुआ, वह अब जातियों के आंकड़ों का नहीं होगा, इसकी क्या गारंटी है ? जाति का जहर स्वाधीनता आंदोलन को नष्ट कर सकता था इसीलिए कांग्रेस ही नहीं, भगतसिंह, सुभाष, सावरकर और यहां तक कि आंबेडकर जैसे लोगों ने भी जातिवाद का विरोध कियाद्य आंबेडकर ने तो 'जातिप्रथा का समूलनाथ' नामक ग्रंथ भी लिखाद्य आजादी के बाद राममनोहर लोहिया ने 'जात तोड़ो' आंदोलन भी चलायाद्य जातीय गणना आंबेडकर और लोहिया के सपनों को दफन कर देगीद्य

भारत के किसी भी आर्स-ग्रंथ में जनमना जाति का समर्थन नहीं है बल्कि कई जगह कहा गया है दृ 'जनमना जायते शूद्ररू, संस्कारात्र बिजउच्यते' अर्थात जन्म से सब शूद्र होते हैं, संस्कार से द्विज बनते हैंद्य गीता में भगवान कृष्ण भी यही कहते हैंद्य दृ चातुर्वण्यं मया सृष्टम गुणकर्मविभागशरू द्य याने चारों वर्ण मैंने गुण-कर्म के आधार पर बनाए हैंद्य मनुस्मृति में भी जन्मना जाति का स्पष्ट विरोध हैद्य इसीलिए मैं कहता हूं कि जो लोग जातीय आधार पर राजनीति कर रहे हैं, उन्हीं की व्याख्या के अनुसार वे घोर 'मनुवादी' हैंद्य उन्होंने मनु की मूर्खतापूर्ण व्याख्या की और वे खुद उस 'मनुवाद' के सबसे बड़े प्रवक्ता बन गए हैंद्य कैसी विडंबना है कि जिन्हें जातिवाद के समूलनाथ का व्रत लेना चाहिए था, वे उसके सबसे बड़े संरक्षक बन गए हैंद्य

डह. लोहिया ने कहा था, 'मैं समझता हूं कि हिंदुस्तान की दुर्गति का सबसे सबसे बड़ा कारण जाति प्रथा हैद्य' उन्होंने विदेशी हमलावरों की विजय का कारण भी देश में चली आ रही जाति प्रथा को ही माना हैद्य जाति-प्रथा सामाजिक जड़ता की प्रतीक हैद्य जब तक देश में जाति प्रथा कायम रहेगी, किसी को सामाजिक न्याय मिल ही नहीं सकताद्य अपनी योग्यता से कोई आगे नहीं बढ़ सकताद्य यदि आप ब्राह्मण के घर में पैदा नहीं हुए तो शोध और अध्ययन नहीं कर सकते, यदि आप राजपूत नही तो हमलावरों से कैसे लड़ेंगे, यदि आप बनिए के घर पैदा नहीं हुए तो पूंजी कैसे बनाएंगे और यदि आप शूद्र के घर जन्मे हैं तो आप सिर्फ झाडू लगाएंगे या मजदूरी करेंगेद्य किसी भी राष्ट्र को तबाह करने के लिए क्या इससे अधिक कुटिल सूत्‍ कोई हो सकता है? भारत महाशक्ति बन रहा है तो इस सड़े हुए सूत्‍ के पतले पड़ने के कारणद्य अब जातीय गणना करवाकर इस सूत्‍ को, इस धागे को क्या हम मोटे से रस्से में नहीं बदल देना चाहते हैं ? पिछले सौ-सवा सौ में देश की विभिन्न जातियों के जो कठघरे जरा चरमराए हैं और इस चरमराहट के कारण जो सामाजिक तरलता बढ़ी है, क्या जातीयता बढ़ाकर हम उसे भंग नहीं कर देंगे ? यदि शासकीय नीतियों का आधार जाति को बनाया जाएगा तो क्या हमारे अनेक पिछड़ी जातियों के नेताओं, विद्वानों और उद्योगपतियों को दुबारा उनके पुश्तैनी धंधों में धकेला जाएगा ? क्या उन्हें भेड़-चराने, मैला साफ करने और जूते गांठने पर मजबूर किया जाएगा ? यदि नही तो फिर जातीय चेतना जगाने की तुक क्या है ?

जात को खत्म किए बिना देश से गरीबी खत्म नहीं की जा सकतीद्य जन-गणना में जाति जुड़वाने के बजाय मांग तो यह होनी चाहिए कि प्रत्येक व्यक्ति अपने नाम के आगे से जातीय उपनाम (सरनेम) हटाए, जैसे कि हमारी मतदाता-सूचियों में होता हैद्य अंग्रेज के आने के पहले क्या भारत में कोई जातीय उपनाम लगाता था ? राम, कृष्ण, बुद्ुघ, महावीर, सूर, तुलसी, कबीर, अशोक, अकबर, प्रताप, शिवाजी, नानक, कबीर दृ किसके नाम से उसकी जाति पता चलती है द्य गुलामी में पनपी इस विष-बेल को हम कब काटेंगे ? जो भी जातीय उपनाम लागएं, ऐसे उम्मीदवारों को चुनाव न लड़ने दिये जाएं और सरकारी कर्मचारियों पर भी यहीं प्रतिबंध लागू किया जाएद्य जातीय आधार पर आरक्षण मांगनेवाले दलों की वैधता रद्रद की जाएद्य जाति के इन बाहरी चिन्हों को नष्ट किया जाए तो वह अंदर से भी टूटेगीद्य

जात-पांत के पतले पड़ने के कारण ही भारत की गुप्त ऊर्जा का अपूर्व विस्फोट हुआ हैद्य ऐसे लाखों-करोड़ों लोग हैं, जो अपने जातीय धंधों की अंधी गली से

शेष पृष्ठ १९ पर

मजहबी आरक्षण के खतरे

डा.वेदप्रताप वैदिक

आंध्र के उच्च न्यायालय ने कमाल कर दियाद्य करेले को नीम पर चढ़ने से रोक दियाद्य जाति के आधार पर दिए जा रहे आरक्षण से यह देश पहले से ही खोखला हो रहा है, अब मजहब के आधार पर भी आरक्षण दिया जाने लगा थाद्य पांच राज्यों में पिछले दिनों चुनाव जीतने की बड़ी चुनौती कांग्रेस के सामने थी। उसे नई तिकड़म सूझी। उसने सोचा कि यदि उसे मुसलमानों के थोकबंद वोट हथियाने हैं तो वह उनके सामने आरक्षण की गाजर लटका दे। उ.प्र. में इस हथकंडे के सफल होने की आशा सबसे ज्यादा थीद्य दिसंबर २०११ में केंद्र सरकार ने घोषणा कर दी कि शिक्षा और सरकारी नौकरियों में मुसलमानों को भी ४.५ प्रतिशत आरक्षण दिया जाएगाद्य लेकिन मुसलमान जरा भी नहीं फिसलेद्य उन्होंने चुनावों में कांग्रेस को सबक सिखा दिया। अब आंध्र के उच्च न्यायालय ने दोहरी मार लगा दीद्य कांग्रेस के सांप्रदायिक आरक्षण को राजनीति और कानून दोनों ने रद्द कर दिया।

अदालत ने सरकार के इस आदेश को चलताऊ बतायाद्य उसका कहना है कि सरकारी वकील यह नहीं बता सके कि 'अल्पसंख्यक' का अर्थ क्या है? क्या सिर्फ मुसलमान ही अल्पसंख्यक हैं? क्या भारत में दूसरे अल्पसंख्यक नहीं हैं? क्या ईसाई, बौद्ध, सिख, यहूदी और पारसी अल्पसंख्यक नहीं हैं? यदि अल्पसंख्या का आधार धर्म या मजहब ही है तो मुसलमानों के मुकाबले ये अन्य धर्मावंलबी तो कहीं ज्यादा बड़े अल्पसंख्यक हैं, क्योंकि इनकी संख्या तो बहुत कम है। हालांकि अदालत ने यह तर्क नहीं दिया है लेकिन तर्क तो यह भी बनता है कि यदि आरक्षण का आधार अल्पसंख्या है तो जो अत्यल्पसंख्यक हैं, उन्हें भी आरक्षण मिलना चाहिए और ज्यादा मिलना चाहिए। पहले मिलना चाहिए। सरकारी आदेश में इसके बारे में कोई संकेत नहीं है याने अदालत की नजर में यह आदेश जारी करते समय सरकार ने लापरवाही बरती है। अदालत की यह आलोचना जरा नरम है। उसे कहना चाहिए था कि सरकार ने लापरवाही नहीं बरती है बल्कि उसने मुसलमानों को मवेशियों का रेवड़ बनाकर बड़ी चतुराई से उनके थोकबंद वोट खींचने की साजिश की थी।

वास्तव में हमारी अदालतों को चाहिए कि वे 'अल्पसंख्यक' शब्द पर ही गंभीर बहस चलाए। राजनीति में 'अल्पसंख्यक' कौन है? वही है, जो खुद हार जाए या जिसका उम्मीदवार हार जाए। हर चुनाव में मतदाताओं का एक हिस्सा बहुसंख्यक सिद्ध होता है और दूसरा अल्पसंख्यक! बहुसंख्या और अल्पसंख्या बदलती रहती है। लोकतंत्र में कोई भी स्थायी अल्पसंख्यक और स्थायी बहुसंख्यक नहीं हो सकताद्य भाषा, धर्म, जाति, रंग-रूप में जरूर स्थायी अल्पसंख्यक-बहुसंख्यक हो सकते हैं लेकिन उनके नाम पर चलनेवाली राजनीति क्या शुद्ध राजनीति होती है? वह भ्रष्ट राजनीति होती हैद्य मुसलमानों को आरक्षण का टुकड़ा फेंककर अपने जाल में फंसाने के अलावा ४.५ प्रतिशत आरक्षण का मकसद क्या था? यदि सरकार का तर्क यह है कि उसने मुसलमानों को नहीं बल्कि मुसलमानों में जो पिछड़े हैं, सिर्फ उन्हें आरक्षण दिया है तो यह तर्क भी बड़ा लचर है। इसके विरूद्ध कई तर्क खड़े हो जाते हैं।

सबसे पहला तर्क तो यह है कि आप कैसे तय करेंगे कि मुसलमानों में पिछड़ा कौन है? यह सिर्फ जातियों के आधार पर ही तय करेंगे याने आप कानूनी तौर पर यह मानेंगे कि इस्लाम में भी जातियां होती हैं। यह इस्लाम के सिद्धांतों के बिल्कुल विरूद्ध है। इस्लाम तो इन्सानी बराबरी का धर्म हैद्य इस्लाम पर जातिवाद थोपकर क्या आप उसका हिंदूकरण नहीं कर रहे हैं?

दूसरा, मुसलमानों में जिन जातियों को आप पिछड़ा मान लेंगे वे फायदे में रहेंगी और जिन्हें पिछड़ा नहीं मानेंगे, वे नुकसान में रहेंगी। आप धार्मिक आरक्षण के नाम पर अपना उल्लू तो सीधा कर लेंगे लेकिन गरीब मुसलमानों को आपस में लड़वा देंगे। उनमें फूट डलवा देंगे।

तीसरा, यदि आप गरीबी के आधार पर पिछड़ापन तय करते हैं तो फिर गरीबों में भी फर्क क्यों डालते हैं? एक गरीब और दूसरे गरीब में फर्क क्या है? क्या गरीब लोग सिर्फ हिंदुओं और मुसलमानों में ही है, क्या दूसरे मजहबों में नहीं हैं? सिर्फ मजहबों की ही बात नहीं है। यह बात जात पर भी लागू होती है। कोई किसी भी जाति का हो, यदि वह गरीब है तो उसे आरक्षण क्यों नहीं मिलना चाहिए? किसी भी जाति या मजहब के अमीर व शक्तिशाली व्यक्ति को आरक्षण देना सामाजिक न्याय नहीं, सामाजिक अन्याय है।

चौथा, अनेक मुस्लिम संगठनों ने मांग की थी आरक्षण देना है तो सभी मुसलमानों को दें ताकि आरक्षित पदों को भरनेवाले लोग तो मिल सकें। वरना मोची, ठठेरे, लुहार, कुम्हार, भिश्ती, कसाई जैसे मुसलमान सरकारी आरक्षित पदों को कैसे भरेंगे? उन पदों पर पहुंचने की उनमें न तो इच्छा है, न जरूरत और न न्यूनतम योग्यता!

दूसरे शब्दों में यह आरक्षण शुदूघ ध ोखा सिद्घ होगा।

पांचवा, यह आरक्षण मुसलमानों को स्वतंत्र रूप से नहीं दिया गया थाद्य यह पिछड़ों के २७ प्रतिशत के कोटे में से काटकर दिया गया था। याने अब गांव-गांव में रहने वाले हिंदू पिछड़ों और मुस्लिम पिछड़ों में तलवारें खिंचतीद्य उनमें वैमनस्य फैलताद्य इसका एक नतीजा यह भी हुआ कि कांग्रेस ने हिंदुओं और मुसलमानों, दोनों के वोट खोए। आंध्र की अदालत ने दो-टूक फैसला देकर भारत के सांप्रदायिक सदभाव को सबल बनाया है।

छठा, अदालत ने इस सरकारी आदेश को असंवैधानिक करार दिया है, क्योंकि इसका आधार मजहब थाद्य यह कानूनी दृष्टि है। लेकिन राजनीकि दृष्टि से देखें तो यह मजहबी आरक्षण आगे जाकर पता नहीं कितने और कैसे-कैसे 'नए पाकिस्तानों' को खड़ा कर देगा, क्योंकि हमारे यहां तो मजहबों के अंदर भी अनेक उप-मजहब होते हैं।

इस फैसले के विरूद्घ उच्चतम न्यायालय में अपील करने के बजाय भारत सरकार को चाहिए कि वह मजहब के अलावा जाति के आधार पर दिए जानेवाले आरक्षण पर भी पुनर्विचार करे और यह भी सोचे कि आरक्षण सिर्फ शिक्षा में दिया जाए और नौकरी में बिल्कुल भी नहीं। यदि आरक्षण सिर्फ शिक्षा में दिया जाए तो देश के ८० करोड़ गरीबों की जिदंगी में नया उजाला पैदा हो जाएगा। वे जो भी पद पाएंगे वह किसी कि कृ पा से नहीं बल्कि अपनी योग्यता से पाएंगे। उनके आरक्षण का आधार उनकी जरूरत होगी, उनकी जाति नहीं। वे लोग अपने पद पर पहुंचकर सिर्फ अपनी जाति नहीं पूरे देश की सेवा करेंगे। भारत सबल बनेगा।

पृष्ठ १७ का शेष

बाहर निकले और उन्होंने अपनी व्यक्तिगत प्रतिभा से सारे राष्ट्र को रोशन कर दियाद्य जातीय गणना होने पर इन लोगों को अपनी जात लिखानी होगीद्य इनका इससे बड़ा अपमान क्या होगा ? देश का सबसे बड़ा विज्ञानकर्मी क्या यह लिखवाएगा कि वह मछुआरा है ? क्या यह सत्य होगा ? जातीय गणना देश में झूठ का विस्तार करेगीद्य

जातीय गणना उन सब परिवारों को भी काफी पसोपेश में डाल देगी, जो अंतरजातीय हैंद्य जिन परिवारों में पिछली दो-तीन पीढिघ्यों में अंतरजातीय, अंतरधार्मिक और अंतरराष्ट्रीय विवाह होते रहे हैं, वे अपनी जात क्या लिखाएंगे ? जातीय गणना प्रकारांतर से कहेगी कि इस तरह के विवाह उचित नहीं हैं, क्योंकि वे जातीय मर्यादा को भंग करते हैंद्य व्यक्ति-स्वात्रंत्र्य पर इससे बड़ा प्रहार क्या होगा ? भारत के नागरिकों के जीवन का संचालन भारत के संविधान से नहीं, गांवों की खापों और पंचायतों से होगा, जिनके हाथ स्वतंर्त्वेता युवजनों के खून से रंगे हुए हैंद्य

भारत के उच्चतम न्यायालयों के अनेक निर्णयों में जाति को पिछड़ापन के निर्धारण में सहायक तो माना है लेकिन उसे एक मात्र प्रमाण नहीं माना हैद्य उच्चतम न्यायालय ने 'मलाईदार परतों' की पोल खोलकर यह सिद्घ कर दिया है कि गरीबी का निर्धारण सिर्फ जाति के आधार पर नहीं किया जा सकताद्य यदि आरक्षण का आध ार सिर्फ जाति है तो उसी जाति के कुछ लोगों को 'मलाईदार' कहकर आप जात-बाहर कैसे कर सकते हैं ? यदि करते हैं तो आपको मानना पड़ेगा कि गरीबी का निध ारण सिर्फ जाति के आधार पर नहीं हो सकताद्य वास्तव में गरीबी का निर्धारण तो गरीबी के आधार पर ही हो सकता हैद्य उच्चतम न्यायालय ने अपने ताजातरीन निर्णय में दक्षिण भारतीय राज्यों की इस तिकड़म पर भी प्रश्न चिन्ह लगा दिया है कि उन्होंने अपने यहां आरक्षण ६९ प्रतिशत तक कर दिया हैद्य न्यायालय ने उन्हें सिर्फ एक साल की मोहलत दी है, यह सिद्घ करने के लिए कि उन्होंने जो बंदरबांट की है, उसका आधार क्या है ? जाहिर है कि इस बंदरबांट का जातीय आधार उच्चतम न्यायालय की कूट-परीक्षा के आगे ध्वस्त हुए बिना नहीं रहेगाद्य जाति की आड़ में गरीबी को दरकिनार करने की साजिश कभी सफल नहीं हो पाएगीद्य

गरीबी के इस तर्क-संगत आध ार को मानने में हमारे राजनीतिक दल बुरी तरह से झिझक रहे हैंद्य ऐसा नहीं कि वे इस सत्य को नहीं समझतेद्य वे जान-बूझकर मक्खी निगल रहे हैंद्य वे वोट बैंक के गुलाम हैंद्य वे यह मान बैठे हैं कि यदि उन्होंने जातीय गणना का विरोध किया तो उनके वोट कट जाएंगेद्य उन्हें नुकसान हो जाएगाद्य वे यह भूल जाते हैं कि जातीय वोट मवेशीवाद के तहत जातिवादी पार्टियों को ही मिलेंगेद्य उन्हें नहीं मिलेंगेद्य इसके बावजूद उनकी दुकान चलती रह सकती है, क्योंकि देश के बहुसंख्यक लोग जाति नहीं, गुणावगुण के आधार पर वोट करते हैंद्य यदि ऐसा नहीं होता तो केंद्र में कांग्रेस और भाजपा की सरकारें कैसे बनतीं ? देश में जितनी शिक्षा, संपन्नता और आधुनिकता बढ़ेगी, जाति का शिकंजा ढीला होता चला जाएगाद्य जाति गरीबी को बढ़ाती है और गरीबी जाति को बढ़ाती हैद्य जिस दिन हमारे नेता गरीबी-उन्मूलन का व्रत ले लेंगे, जाति अपने आप नेपथ्य में चली जाएगीद्य सदियों से निर्बल पड़ा भारत अपने आप सबल होने लगेगा

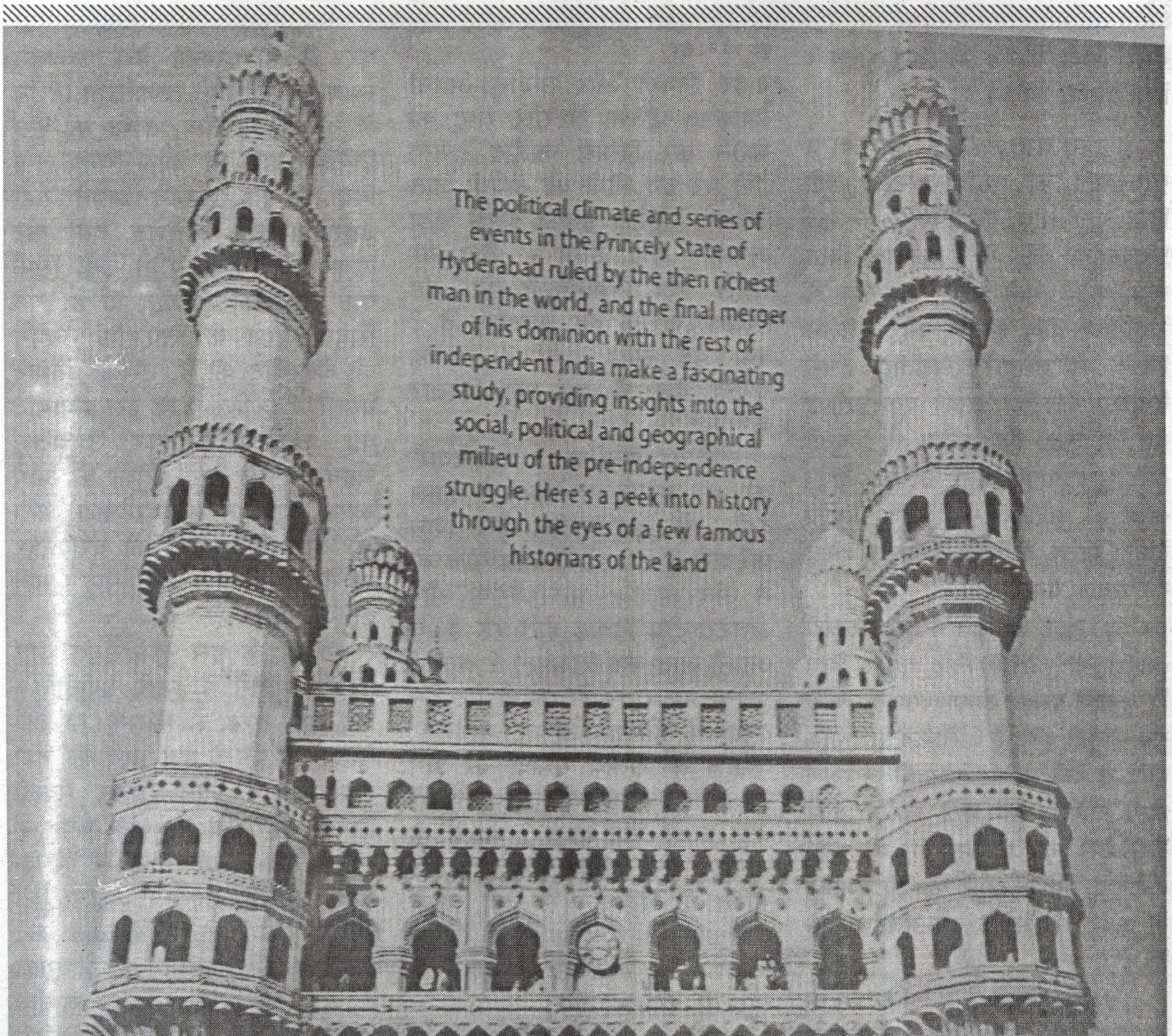

A historical perspective

The political climate and series of events in the Princely State of Hyderabad ruled by the then richest man in the world, and the final merger of his dominion with the rest of independent India make a fascinating study, providing insights into the social, political and geographical milieu of the pre-independence struggle. Here's a peek into history through the eyes of a few famous historians of the land

9

Last Nizam of Hyderabad Mir Osman Ali Khan with first Indian Union Home Minister, Sardar Vallabhai Patel

The past provides us with a lens through which we decipher the present and relate to events around us. Historical research, fiction, memoirs and discussions that dwell on the past become necessary to commemorate events like wars, victories, mergers or separation. The past become necessary to commemorate events like wars, victories, mergers rest but lingers on thought different narratives and perceptions. The September 19, 1948, remains etched in gold in the history of this cosmopolitan and forward-thinking city. New book releases, divergent views on the nomenclature used to describe the day and disdain over distorted history never fail to kick up controversies each year.

The five-day September operation with code names like 'Operation Polo' and 'Operation Caterpillar' better known as 'Police action' brought the curtains down on the writ of the Nizam, who held sway over the region for 37 years. The political climate and series of events in the Princely State of Hyderabad ruled by the then richest man in the world, and the final merger of his domination with the rest of independent India make a fascinating study, providing and geographical milieu of the pre-independence struggle.

This was a period of great turmoil, where large cross sections of society were at strife with the powers that be. *The Congress, the Arya Samajis and the Communists were all waging a struggle o end the feudal system that ruined the rural landscape and liberate Hyderabad from the clutches of the Nizam. Their mode of protests may have been different but their goal was common.* At the other end of the spectrum was an administration led by the 7th Nizam, Mir Osman Ali Khan, who believed that he was the saviour of the masses, born to rule, enjoyed British protection and presided over an independent sovereign State. Mohammed Hyder, a civil servant, who served as collector of Osmanabad (now of Maharashtra) during this period, in his book 'October Coup', a memoir of the struggle for Hyderabad, explains the situation in the following words. "Hyderabad was predominantly Hindu with Muslims representing some 20 per cent of the population. From one perspective its political arrangements were self-evidently undemocratic with an autocratic Muslim ruler at the head of the system and a small apparently reactionary Muslim ruling class dominating its administration and political life." The remarkably contrasting view of the Nizam being a benevolent, secular ruler with an excellent administration and ruling elite is also presented in the same vein - The establishment of a university, a public library, railway lines and industries, placing railway and road transport in the public sector and several other initiatives undertaken to support this viewpoint. The Nizam remained the highest ranking prince in India entitled to a 21 gun salute, was referred to as 'His Exalted Highness' and was a 'faithful ally of the British crown after World War I, owing to his financial contribution to the British empire's war effort.

The nature of land ownership in the region ruled by him was however extremely exploitative, About 40 per cent of the land was directly owned by the Nizam or given by him to the elites as Jagirs (special tenures). The remaining 60 per cent

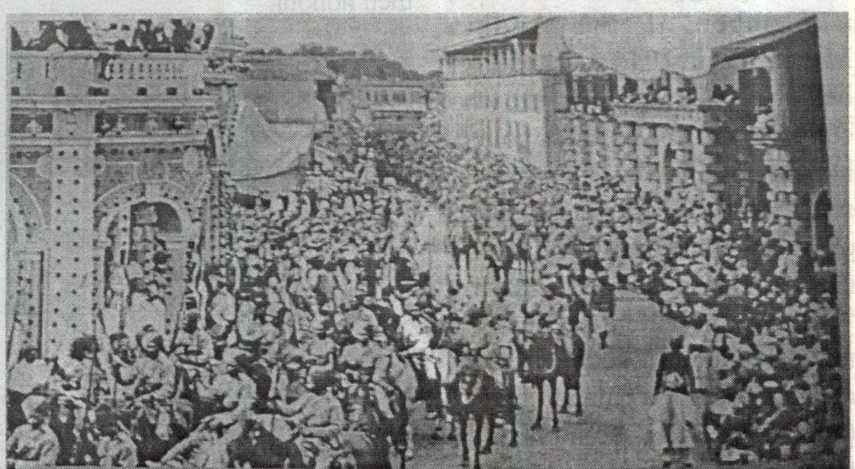

Nizam State Cavalry heading a langer procession through the streets of Hyderabad

Army in action during Operation Polo

was under the land revenue system of the government, which relied on powerful Zamindars (landlords) with no legal rights or sercurity from eviction to the actual cultivators. The vetti (bonded labour) system under which people from the lower castes worked in the household and farms at the will of the landlord, the practice of sending girls as slaves to their houses to be used as concubines, and collection of produce as levy from poor farmers made them defenceless and deprived them of a life of dignity. The instant greeting of submissive welcome by the poor farmers, "Banchanu Dora" (I am your slave) reflected the extreme depravity of the landed class, whose tales of inhuman of the landed class, whose tales of inhuman behaviour abound in the region.

The killing of Doddi Komariah, a member of the Andhra Mahasabha in 1946 sparked a rebellion against the landlords, who colluded with the Nizam's police, henchmen and the Razakars, a newly formed fundamentalist militia of the Majlis-Ittehadul-Muslimeen (MIM) in suppressing the peasantry. "Land for the Tiller" become the new slogan and Landlords were driven out of their palatial 'gadis' (bungalows). The communist-led movement gradually gained strength and assumed the character of a national liberation struggle to end the misrule of the Nizam and the hegemony of the feudal lords. Ampasayya Naveen's Sahitya Academi Award-winning book 'Kaalarekhalu' (Imprints of time) traces atrocities like murder, rape, arson and looting unleashed by notorious landlords like Visnoor Zamindar Ramachandra like Visnoor Zamindar Ramachandra Reddy, the emergence of communists as protectors fighting the razakars, and the integration of Hyderabad with India after the courageous intervention ordered by India's first home minister Sardar Vallabh Bhai Patel. It also narrates the plight of women, who bore the brunt of the attacks and tied chilli powder around their waists to save their honour.

Noted communist leader Puchalapalli Sundarayya in his book 'Telangana: People's struggle and its lessons', talks about the enormous support that the communist guerilla squads received from the men and women of the villages united in their fight against a cruel regime. Razakars, who had their centres in huge cities and towns used to raid villages, loot the people and pull down the national and red flags. They had spears, jambias, swords, muzzle loaders and rifles with them whenever they made these raids. One thing must be noted here that just as in the earlier period, the people both Hindus and Muslims, had fought in the villages against the landlords unitedly so also they fought shoulder to shoulder against the Razakars without falling prey to religious fanaticism'. "Bandenka, bandi katti padahaaru bandlu katti" (In your convoy of 16 yerhicles, where will you be hiding, as we prepare to dig your grave, O Nizam?) was one of the many popular songs that resounded in the villages and enthused people in their fight against the Nizam.

'India is a geographic notion. Hyderabad is a political reality. Are we prepared to sacrifice the reality of Hyderabad for the idea of India?' the documented response of Qasim

Razaakars

Prime Minister Jawaharlal Nehru with the Nizam of Hyderabad Mir Osman Ali Khan

Razvi, to a question about the future of Hyderabad depicts the intentions of the man, who gained notoriety for sowing the seeds of communal divide in Hyderabad. This small time lawyer from Latur, who emerged as an important leader of MIM and led the fundamentalist militia of armed Razakars (volunteers), had no qualms about killing journalist Shoebullah Khan, a fellow Muslim, who exposed the atrocities of the Razakars and police through his paper 'Imroz'. Not only was he shot down but his arm cruelly cut as an act of revenge. Maqdoom Moinuddin, a blithe spirit, romantic and revolutionary poet, who strayed into politics as a communist party worker was vocal in his criticism of the oppressive rule of the Nizam and was jailed for trade union activities several times. He was one of the many progressive voices that denounced the activities of fundamentalists surrounding the Nizam.

The paramilitary wing created by Razvi organised on the model of the "Brown Shirts" of Hitler had to take a pledge that they would sacrifice their life for the party and flight till the very end to maintain Muslim power in the State.

They were armed with a variety of weapons that included swords, spears, .303 ore rifles and muzzle-loading guns. Former bureaucrat and historian Narendra Luther in his book 'Hyderabad - A Biography' says, "I was widely believed that Razvi had the blessings of the Nizam, though in the later period he began to dictate terms even to him. He enjoyed the material and financial support of the government and leading industrialists like Laik Ali, Ahmed Alladin and Babu Khan, who gave liberal financial help to the Ittehad and to Razvi."

"Razvi promised his followers that the waters of the Bay of Bengal would kiss the feet of the Nizam and that the Asafia flag would be planted on the ramparts of the Red Fort at Delhi," he adds.

When the British departed from India in 1947, they gave the Princely States the option of acceding to either India or Pakistan or staying as an independent State. In March 1947, Lord Mountbatten arrived in India with the mandate of granting freedom to the country. The Nizam had declared that he would neither join India nor Pakistan (after realising that joining Pakistan would not be possible) but would remain independent. A decision to sign the 'standstill agreement" between Hyderabad and the Indian Union, which spoke of maintaining the status quo of the Princely State of Hyderabad for one ear during which no military action would be taken, was apposed by Razvi, who staged a demonstration in front of the houses of the Prime Minister, Nawab of Chattari, advisor Sir Walter Monckton, and minister Nawab Ali Nawaz Jung, the main negotiators of the agreement. After many developments and the appointment of Laik Ali as Prime Minister in place of Chhattari, the agreement was signed in November 1947.

The Nizam's ill-advised decision to take the Hyderabad dispute to the United Nations, banning Indian currency in the State, engaging an Australian gun runner in smuggling arms into Hyderabad and sanctioning of a 200 million loan to Pakistan, were a breach of the 'standstill' agreement and hostile acts intended to provoke Delhi. A report about the increasing atrocities of the Razakrs and the fact that the Nizam would neither accede to India nor introduce a responsible government in the state become increasingly clear and the centre was forced to act. Maj. Gen J Chaudhari-led the military operation to victory and Hyderabad became a part of India. The action had its dark moments too. There were reports of arson, looting and reprisal killing of Muslims and communists with the Sunderland committee appointed by Nehru putting the number anywhere between 27,000 to 40,000. There was, however, a feeling of relief that an autocratic rule that wanted to align with forces not acceptable to a majority of the people had at last come to an end. It was a victory against an unacceptable regime devoid of communal feelings. Nationalistic fervour gripped the people and an air of festivity enveloped the city and surrounding areas.

The shouting rampaging crowds of Razakars had disappeared and the streets of Hyderabad were a sea of humanity with people of all ages coming out waving the tri colour. 'Quami nara' (The slogan of the land)... a shrill lone voice shouted and the mob replied in unison 'Jai Hind'. The city built on the foundation of love resonated with patriotic fervour and the pride of belongingness. History does have its bright moments and invaluable lessons.

- The articleis based on 'Hyderabad- A Biography' by Narendra Luther; 'Kaalarekhalu' by Ampasayya Naveen, 'October "Coup' by Mohammed Hyder'; "Telanga: People's struggle and its lessons' by Puchalapalli Sundarayya.

-from the Hans India

ఆ చెట్టు

కాలి నడకన వెళ్లిన రోజుల నుంచి
కళ్లతో ఆ చెట్టును చూస్తున్నాను
ఆ చెట్టును చూసినప్పుడల్లా
అమ్మానాన్నలే గుర్తుకొచ్చేవాళ్లు

విత్తనం ఎవ్వరేశారో గాని
వియత్తలాన్ని అందుకున్నది చెట్టు
కొమ్మలతో రెమ్మలతో
కొత్తగా అనిపించింది ఎప్పుడు చూసినా

అక్కడా ఇక్కడా వున్న చెట్లంటే
అంతగా సానుభూతి లేదు నాకు
పదిమంది వెళ్లే దారిలో
పగలురేలు కాపలాదారులా నిలబడ్డది.

అందరి దృష్టిలో అదొక చెట్టు
అంతర్నేత్రానికి తెలుస్తుంది దాని గుట్టు!
ఎండలో నడిచే బాటసారికి
ఎంతోసేపు పట్టుదు గొడుగుగా మారడానికి.

ఏ క్రూర జంతువైనా ఎదురొస్తే

ఎక్కి కూర్చోమంటుంది తన భుజాల మీద
ఎవరికైనా ఆకలేస్తే
ఎంగిలి చేయమంటుంది తన పళ్లను

కాలినడకన వెళ్లే దారిలో
కనిపించే ఆ చెట్టు లేదిప్పుడు!
కొన్నాళ్లుగా నేను కూడా
కాలి నడకకు స్వస్తి చెప్పాను

నీళ్లు పోసేవాడు లేకపోగా
వ్రేళ్లు నరికేవాడు దాపురించాడు
యంత్రాలు లేనికాలంలో
మంత్రించిన దానిలా నిలబడ్డ చెట్టు
దాహంతో కూలిపోలేదు
ఆకలితో ఆత్మహత్య చేసుకోలేదు

ఇంతకాలం మబ్బునీళ్లు తాగి
ఇజ్జత్‌తో నిలబడ్డది ఆ చెట్టు!
అందరూ తనలా ఎదగాలని
ఆ పిచ్చి చెట్టు కలలుగన్నది.

ప్రాణి కోటికి ప్రాణదాతగా నిలిచిన చెట్టు
రోడ్డు విస్తరణలో భాగంగా
రోడ్ రోలర్‌తో తననెంత గాయపరచినా
నోరు తెరిచి ఎవరికీ చెప్పుకోలేకపోయింది

ఎవరో ఒక శాస్త్రవేత్త
తనకూ ప్రాణముందని చెప్పినప్పుడు
దానికెంత ఆనందం కలిగిందో!

ఈ రోజు తనను నరికేసి
ఈడ్చుకెళ్లి ముక్కలు చేస్తే
చివరికి పెకలించిన వాని
చితిలో పాలు పంచుకునది చెట్టు
అతనితో పాటు భస్మమై
అనంత వాయువుల్లో కలిసిపోయింది చెట్టు!

– ఆచార్య మసన చెన్నప్ప

9885654381

బాధ్యత మరువ కూడదు

స్వాతంత్ర్యపోరాటంలో
కీలకపాత్ర వహించిన
కాంగ్రెస అధికారానికి వచ్చాక, దేశాన్ని ఎంత
కాలుష్యపర్చిందో, ఇష్టా రాజ్యంగా ఏలిందో,
అదే విధంగా తెలంగాణ ఉద్యమంలో కీలక భూమిక పోషించిన తెరాస కూడా ఆ విధముగానే ప్రవర్తిస్తుంది.
ఈ ప్రజాస్వామిక పాలన రాచరికంగా పాలకులకు సంతోషాన్ని ఇవ్వచ్చేమో గాని, ప్రజలకు దీర్ఘకాలిక సంక్షేమాన్ని అంది
విముక్త పోరాటంలో ఏ ఆత్మాభిమానం కోసం తపించామో,
ఇప్పుడు ప్రశ్నించే వారిని అధికారంతో అణగదొక్కాలనుకోవటం వారి నియంతృత్వ మనస్తత్వాన్ని తెలియచేస్తుంది.
చిన్న సమస్యలే పెద్ద మలుపులకు దారి తీస్తాయి,
ధనవంతులే, వారి ప్రయోజనాలే ప్రధానం అనుకుంటే,
ఇప్పుడు కనబడే ఈ చిన్న కంత పడవను ముంచేసే పెద్దగా మారిపోతుంది.
ఇంకా ఎంతో కాలం సెంటిమెంట్ తో బతుకు వెళ్ళదీసుకోవటం సాధ్యపడదు.
ప్రతిపక్షం లేకుండా పాలించటం ఎన్నటికీ క్షేమం కాదు,
ప్రతిపక్షం లేకుండా ప్రజలు పూర్తిగా ఎన్నుకోవటం వేరు,
ప్రతిపక్షాన్ని యితర పద్ధతుల ద్వారా కలుపుకోవటం వేరు,
రెండింటి మధ్యన ఎంతో తేడా ఉంటుంది.
లక్షలాదిమంది ఏ ఆకాంక్షల కోసం త్యాగాలు చేశారో, వాటిని తీర్చ నెరవేర్చాల్సిన బాధ్యత మరువరాదు!!

बचाओ

मुझे बचाओ मेरा दूध पीने वालो –
मुझे बांधके ले गए कसाई,
रस्सी खोल नही सकते ?
काटते सरेआम मुझे,
हिन्दू बोल नही सकते ?
धिक्कार मेरी रक्षा के लिए,
भारत में कोई कानून नही !
झूठी छाती मत ठोको,
तुम में खून नही !
मुझे बचा नही सकते तो,
फिर किस लिए माता कहते हो
बहते रहते हैं मेरे आंसू,
तुम फिर भी गूंगे बनके रहते हो।
क्रिकेट बहलीवुड के दीवाने बनते हो
मुझे खाने वालो की कमाई करा के
राम कृष्ण के भक्त कहते हो
शर्म करो अपनी माँ को बेचते हो
और भारत को महान कहते हो

వేదము - మానవ కళ్యాణము

వైదిక ధర్మావశ్యకత

- దేవరకొండ దత్తాత్రేయ

ప్రశ్న :- వైదిక ధర్మమన నేమి ?

ఉత్తరము :- వైదిక ధర్మమనగా వేదములను చదివి వాని యర్థముల నెరింగి తదనుకూలాము గవ్యవహరించుట.

ప్రశ్న :- వైదిక ధర్మము వలన కలుగు లాభమేమి ?

ఉత్తరము :- వైదిక ధర్మము వలన మానవుల చెడుగులన్నియు దూరమసనం. వారికి మంచి విషయములు ప్రాప్తించును, మానవులు దు:ఖముల నుండి తప్పించుకొని సుఖములను పొందుదురు.

ప్రశ్న :- ఇది మీరెట్లెరింగితిరి ?

ఉత్తరము :- ఇందులకు వేదములోని ఈ ప్రార్థన మంత్రమును చూడుడు.

"విశ్వానిదేవ సవితర్దురి తాని పరాసువయ ద్భద్రంతన్న ఆసువ"

అర్థము :- ఓ పరమాత్మా ! నీవు సత్కర్మలజేయ నెల్లరిని ప్రేరేపింతువు. వేని వలన మా చెడుగులన్నియు దూరమగునో, ఏవి మాకు సుఖప్రదాయికములగునో, అవి సిద్ధించునట్లు అనుగ్రహింపుము.

ప్ర :- ఇది మీరెట్లెరింగితిరి ?

ఉ :- ఇందులకు వేదములోని ఈ ప్రార్థన మంత్రమును చూడుడు.

"విశ్వానిదేవ సవితర్దురి తాని పరాసువ యద్భద్రంతన్న ఆసువ" య-అ30-మం-3

అర్థము :- ఓ పరమాత్మా ! నీవు సత్కర్మల జేయ నెల్లరిని ప్రేరేపింతువు. వేని వలన మా చెడుగులన్నియు దూరమగునో, ఏవి మాకు సుఖప్రదాయకములగునో, అవి సిద్ధించునట్లు అనుగ్రహింపుము.

ప్ర :- వేద పఠనము వలన సుఖము లభించునా ?

ఉ :- వేదములను చదివి తదుపదేశాను సారము ఆచరించుట వలన తప్పక సుఖము లభించును.

కుర్వన్నే వేహకర్మాణిజి జీవిషేచ్ఛతగ్ం సమా: ఏవంత్వయి నాన్యథే తోస్తి న కర్మ లిప్యతే నరే:

-య, అ40-మం, 2

అర్థము :- వేదవిహితములైన కర్మలనే యాచరించుచు-మానవుడు నూరేండ్లు జీవింప గోరవలయును. కర్మలను కర్తవ్య బుద్ధితోనే చేయవలెగాని, ఫలాపేక్షచే తగదు. బంధముల నుండి విడివడి మోక్ష సుఖమందుట కిదియే మార్గము. వేరొండు మార్గము లేదు.

ప్ర :- వేదములను చదువుటయు, వాని యర్థములనెరుంగుటయు మిక్కిలి కష్టము. దీని నెల్లరు చేయగలరా ?

ఉ :- మోక్షము కూడా శ్రమలేక లభించదు. పిండి కొద్దీ కొట్టెకదా ! యథాశక్తిగ వేద విషయముల నధ్యనము చేయుటకు యత్నింప వలయును. దీని వలన క్రమముగా చెడుగులు దూరమగును. మంచి విషయములలో ప్రకృత్తి కలుగును. పాపము తగ్గుచున్న కొలది పుణ్యము వృద్ధియగును. దు:ఖములు దూరమగును.

ప్ర :- వేద పఠన మాత్రముననే దు:ఖవిముక్తి కలుగ గలదా ?

ఉ :- వేదాను కూలమైన ఆచరణ లేక కేవల వేదపఠనముచే కార్యము నెరవేరజాలదు. రోగి ఔషదమాగము చదివినంత మాత్రముననే రోగ విముక్తుడు కాలేడు. ఔషద సేవనము వలననే రోగిరోగవిముక్తుడగును. అట్లే, వేద మంత్ర పఠనమున కేవలము కర్తవ్య జ్ఞానము సిద్ధించును. కర్త వ్యపాల చేయనంత వరకు వానికి యధార్థమైన లాభము కలుగనేరదు.

"ఉత, త్వ: పశ్యన్నద దర్శవాచముత్వ: శృణ్వన్నశృణోత్యే నామ్"

బు-మ10-సూ71మం4)

అర్థము :- ఒకడు చూచు చుండియు చూడడు. ఒకడు వినుచుండియు వినడు. అనగా ఎవడు వేదమును చదివిగాని తదుపదేశ మాలించి గాని యాచరింపడో, వాడు అంధునితో లేక బధిరునితో సమానుడగును.

మంత్రము :- "అధేన్వా చరితిమాయయైష వాచం శుక్రవాం అ ఫలామ పుప్పాం"

(బుమ. 10సూ-71మ. 5)

అట్టివానిని మాయా నినిర్మిత (గారడి విద్యచే చేయబడిన) ధేనువును వెంటబెట్టుకొని తిరుగాడు వానినిగా నెంచవలెను. అది పాలనీయదు. అదే విధముగ వేదానుకూల కార్యచరణ లేని వాడు వేద విద్యావృక్ష పుష్పములను గాని ఫలములనుగాని బడయ జాలడు. కావున మానవులు వేదములను పఠించి విషయములను తెలిసికొని యాచరింప వలయును. వేదములను పూర్తిగా చదువజాలని వారు వేద విషయములను ప్రతిపాదించు నిట్టి చిన్న పుస్తకములనైనను చదువవలయును.

వేదము

ప్ర :- వేదమన నేమి ?

ఉ :- అత్యంత ప్రాచీనములైన నాలుగు గ్రంథములను వేదములందురు.

(1) బుగ్వేదము, (2) యజుర్వేదము, (3) సామవేదము, (4) అథర్వవేదము. వీని కంటె ప్రాచీనమైన ధర్మ గ్రంథము మరియొకటి ప్రపంచమున లేదు. ఇతర గ్రంథములన్నియు వేదములకు తర్వాతనే రచింపబడినవి.

ప్ర :- వేదముల నెవరు రచించిరి ?

ఉ :- వేదములు మానవ రచితము కావు. సృష్టికర్తయగు ఈశ్వరుడు సృష్టియొనర్చి యారంబమున మానవులకు మేలొనర్చు నిమిత్తమై బుషుల హృదయమున వేదములను ప్రకాశింపజేసెను. సృష్టిలో మొదట అగ్ని, వాయువు, ఆదిత్యుడు, అంగిరసుడు అను నలుగురు మహాబుషులుత్పన్నులైరి. వారిలో నగ్ని హృదయమున బుగ్వేదము, వాయువు హృదయమున యజుర్వేదము, ఆదిత్యుని యందు సామవేదము, అంగిరసుని హృదయమున అథర్వ వేదము ప్రకాశించెను. వారు తదుపరి మానవులలో ఆ వేదముల ప్రచార మొనర్చి తర్వాత నేర్పడిన బుషులు ఆ వేదమంత్రములకు వాఖ్యానాదుల నొనర్చి ఇతర గ్రంథములను రచియించిరి. ఇవియన్నియు వైదిక వాఙ్మయము పేర వ్యహరింపబడుచున్నవి.

ప్ర :- ఇందులకు ప్రమాణమేమి ?

అర్థము :- "తస్మాద్యజ్ఞాత్సర్వహుతబుచస్సా మానిజిజ్ఞిరే

తస్మా ధ్దీజుస్త స్మాదజాయత". య-31-7

అర్థము :- "ఎల్లరకు పూజ్యుడగు ఆ పరమాత్ముని నుండి బుగ్వేదము (సామ వేదము ఛందాని) అథర్వవేదము యజుర్వేదమును జనించినవి. అను ఈ మంత్రమే ఇందులకు ప్రమాణము".

ప్ర :- వేదములు నాలుగు వేర్వేరుగ నుండ

నేల? ధర్మ గ్రంథము యొక్కటిగా నుండవలెను గదా?

ఉ :- నాలుగు గ్రంథములును వేదమని చెప్పబడుటలో నెట్టి యాటంకము ఉండదు. రచనా భేదము, విషయ భేదము ననుసరించి వేదము నాలుగు పేర్లతో నాలుగు గ్రంథము లుగా వ్యవహరింపబడుచున్నవి. చందోబద్ధ వేదము ఋక్కు అనియు, గద్యాత్మక వేదము యజుస్సనియు, గీతాత్మకము సామమనియు, చందస్సులు అథర్వమనియు వేరువేరు నామములతో వ్యవహరింపబడుచున్నవి. అందువలననే ఋగ్వేద మంత్రములు సామవేదమునను చూడనగును. దీనిని పరస్కరించుకొనియే "ఋచ్యధ్యాఢం సామగాయతే" అని మీ మాంసకులు చెప్పుదురు.

యజుర్వేదమున యాజ్ఞిక క్రియా కలాపముల వర్ణనము విశేషముగా జూడబడును. అథర్వమున కృషి, చికిత్స రాష్ట్రము, వివాహము, మున్నగు విషయములు పావరముగ బోధింపబడియున్నవి. ఆయా వేదములను ప్రకటించిన నలుగురు ఋషు లును సమకాలికులే. వారు సృష్టిలో నారంబముననే యుండిరి. నాలుగు వేదములు ఒకే సమయమున ప్రకటింపబడుట చేత నాలుగు వేదముల నామములును నాలుగు వేదము లందును జూడనగును.

1) "ఋక్సామాఖ్యామభిహితౌగావౌ" ॥
10-85-11

ఈ ఋగ్వేదమున ఋక్సామ శబ్దములునవి.

2) "విశ్వేదేవా అనుదత్తే యజుర్గృహం" ॥
ఋ-10-12-3

ఈ ఋగ్వేదమున యజుర్వేద నామమున్నది.

1) "అగ్నిర్జాతో అథర్వణావిదద్విశ్వానికావ్యా" ॥
ఋ-10-21-5

ఇందు యథర్వపదము చూడనగును

ఇక యజుర్వేదమున :-

1) "ఋక్సామయో: శిల్పేస్థ:" ॥ య-4-9

2) "అథర్వభోయ అవతోకా"॥ య-30-15

ఋక్సాను అథర్వ శబ్దముల ప్రయోగము చూడనగును-

"యత్ర ఋషయ: ప్రథమజా: ఋచ: సామయజుర్మహి
ఏకర్షిర్యస్మిన్ నార్పిత: స్కంభంతం బ్రూహికతమ: స్విదేవస:" ఆ(10-7-14)

ఈ అథర్వ మంత్రమున ఋక్, సామ, యజుశ్శబ్దములు ప్రయోగింపబడి యుండుట జూడనగును. అందువలన నాలుగు వేదములు ఒకే కాలమున ప్రకాశింప బడినట్లెంచ వలెను. ఇయ్యవి నాలుగునా విభజింపబడినను అన్నియు వేదములే. వేదమొకటే నాలుగుగా వ్యవహరింపబడుచున్నదనినను దోషము లేదు. వేదమును "త్రయీ" అనియు చతుర్వేదము లనియు వ్యవహరింతురు.

వేద పఠనము వలన లాభము

**మంత్రము :- పావమానీర్యో అధ్యేత్యర్షిభి: సంభృతంరసం తస్మై
సరస్వతీ దుహె క్షీరం సర్పిర్మ ధూదకం.**
ఋ9-67-32

అర్థము :- (య: ఏ మానవుడు (ఋషిభి: సంభృతం) ఋషులచే సంరక్షింపబడినదియు (పావమానీ:) పవిత్రమైనది యునగు (రసం) రసమును (అధ్యేతి) అధ్యనము చేయునో (తస్మై) ఆ పురుషుని కొరకు (సరస్వతి) వేదవిద్య (క్షీరం) పాలు-సర్పి:) నెయ్యి (మధు) తెనె (ఉదకం) నీరు (దుహే) ఇచ్చును.

సృష్ట్యాదిలోనావిర్భవించిన వేదరూప జ్ఞానమును ఋషులు స్వాధ్యాయ ప్రవచనముల ద్వారా సజీవముగా సురక్షిత మొనర్చిరి. దీని పేరే సరస్వతి, వేద విద్య, శాశ్వతము, రసభరితము. వేద విద్యాధ్యనము చేయువారికి ఆ, విద్య స్వయముగా పాలు నెయ్యి, తేనె, నీరు నొసగును. అనగా వేద విద్యాపఠనమున లౌకిక, పారలౌకిక శాంతి లభించును. అట్లే అథర్వవేదమందు;

**"స్తుతామయా వరదా వేద మాతాప్రచోదయ యంతాం పావ మానీద్విజానాం,
ఆయు: ప్రాణం ప్రజాం పశుంకీర్తిం ద్ర విణం బ్రహ్మ వర్చసం మహ్యం దత్వావ్రజత బ్రహ్మలోకం"** ఆ-19-71-1

అర్థము :- (వరదా వేదమాలూ మయాస్తులూ) వీరములనిచ్చు వేదమాతను నేను స్తుతించితిని. (ప్రచోదయంతాం ద్విజానాంపావమానీ) ఏ విద్వాంసులు ఈ వేదమాత యొక్క ప్రేరణ మును పొందగలరో, వారి నామె పవిత్రులను చేయును. ఏ వేద విద్వాంసులారా ! (మహ్యం) నాకు (ఆయు:) జీవనము (ప్రాణం) ప్రాణశక్తిని (ప్రజాం) సంతానమును (పశుం) పశువులను (కీర్తిం) యశస్సును (ద్రవిణం) ధనమును (దత్వా) ఇచ్చి (బ్రహ్మలోకం) మోక్షమును- (వ్రజత) పొందించుడు. (పొందుడు)

వేదములను చదువుచు, చదివించుచు, తదను కూలముగా జీవన నిర్వహణమును చేయుటచే మానవులకు ఈ లోకమందు అభ్యుదయమును, జీవితాంతమున నిశ్రేయస మును కలుగును. ఇహపర లోకములు రెండును సుఖకరములగును. కావున వేదములను చదువ వలయును.

1) వేదమందీశ్వర స్వరూపము

"య:పృధివీం వ్యథమానామదృంహద్య: పర్వతాన్ ప్రకుపితాన్ అరమ్ణాత్, యో అంతరిక్షం విమమే వరీమో యోద్యావస్తభ్నాత్ సజనాస ఇంద్ర: (ఋ-2-12-2)

అర్థము :- ఓ ప్రపంచ ప్రజలారా ! ఎవడు కదలుచున్న (ద్రవీభూతమైన) పృథివిని ఘనీభవింపజేసెనో, కంపించుచున్న పర్వత ములను స్థిరీకరించెనో, విశాలాంతరిక్షము నేర్పరచి ద్యులోకములను సుస్థిత మొనర్చెనో అతడే ఈశ్వరుడు.

ప్ర :- కొందరు ఈశ్వరుని సృష్టికర్తగా నంగీకరించరు గదా ?

ఉ :- అది సరికాదు. వేదములందీశ్వరుడు సృష్టికర్తగా చెప్పబడినాడు.

"సఖాపితా పితృతమ: పితౄణాం కర్తే ములోక ముశతే వయోధా: ॥" ఋ-4-17-17

ఈశ్వరుడు (సఖా) హితైషి (పితా) పాలకుడు- పితౄణాం పితృతమ:) ఎవరు ప్రపంచమందు రక్షకులో వారిలో నుత్తమ రక్షకుడు (కర్తా) కర్త. (ఈండ) నిశ్యముగా (ఉశతే) భక్తుల కొరకు (వయోదా:) దీర్ఘ జీవనమును సంపదలను ప్రసాదించువాడు. ఈ మంత్రమున కర్తయను శబ్దము స్పష్టముగా కనబడుచున్నది.

2) ఈశ్వరుడు సర్వ వ్యాపకుడు, నిరాకారుడు

మంత్రము :- "సపర్యగాచ్ఛు క్రమకాయ మీప్రణ మస్నావిరగ్ం శుద్ధ
మపాపవిద్ధం కవిర్మనీషీ: పరిభూ: స్వయం భూర్యా తథ్య
తోర్థాన్ వ్యధాచ్ఛాశ్వతీ భ్య: సమాభ్య:
(మ-40-8)

అర్థము :- (సపరి + అగాత్) ఈశ్వరుడు అంతట ఉన్నాడు. (శుక్రం) స్వచ్ఛుడు. నిర్మలుడు. (అకాయం) నిరాకారుడు. (అవ్రణం) ప్రణరహితుడు (అస్నావిరం) నాడీ బంధ రహితుడు. అనగా జీవుడు శరీర ధారణ మొనర్చి నరముల చేతను, నాడుల చేతను బద్ధుడైనట్లు ఈశ్వరుడు యెప్పుడు బద్ధుడు కాదు. (శుద్ధం) శుద్దుడు. (అపాపవ విద్ధం)

పాపములచే లిప్తుడు కాడు. (కవి:) జ్ఞానవంతుడు (మనీషీ) ఆలోచించువాడు. (పరిభూ:) సమస్త ప్రపంచమును పరివేష్టించిన వాడు. అతనికి వెలుపల నేదియును లేదు. (స్వయంభూ:) ఇతర వస్తువులపై నాధార పడక స్వయం స్థితిగల వాడు. (శాశ్వతీభ్యా: సమాఖ్యా:) నిత్యులగు తన జీవుల కొరకు (యథాతధ్యత:) తగినట్లు (వ్యదధాత్) వ్యవస్థ నొనర్చెను. జీవులకు మృతి లేదు. వారును నిత్యులు. అజరామరులు అందువలననే వారిని (శాశ్వతీస్సమా:) నిత్యులగు ప్రజలు అని చెప్పబడినది. జీవులు నిత్యులు నిరాకారులే కాని (అస్నావిరం అవ్రణం అపావవిద్ధం) అనగా వాడు నాడీ బంధములందు చిక్కుకొనని వారు మాత్రము కారు. వారు పాపములచే లిప్తులు. సర్వ ప్రాణులు అజ్ఞానవశులై పాపమొనర్తురు. అందువలన పాపవిముక్తుల గుటకు విధాననరము. పరమాత్ముడి విధానమును (వ్యదధాత్) రచించును. కావున అతడు విధాత.

విధానము రెండు తెరగులు. (1) ఈశ్వరుడు ఋషుల హృదయములందు వేద రూప జ్ఞానము నొసంగుట. (2) సృష్టిరచనా క్రమము. వీనిని మానవులు బాగుగా పరిశీలించి సృష్టి నియమముల నన్వేషింతురు, వేదజ్ఞులైన విద్వాంసులు వేదములను పఠించి సృష్టి నియమముల నెరుంగుదురు. దీనినే శాస్త్రమందురు. సృష్టి నిరీక్షణము చేసి దాని నియమముల నెరుగు వారు వైజ్ఞానికులు. (సైంటిస్టులు) అనబడుదురు. అందువలననే వేదజ్ఞానము, విజ్ఞానము (Science) రెండును పరస్పర విరుద్ధములు కావు. పరస్పర సహాయకములన వచ్చును. అవిచ్ఛేద్యములైన సృష్టి నియమము లెవ్వరు నుల్లంఘింపజాలరని విజ్ఞాన శాస్త్రము బోధించును. ఈ జ్ఞానము భౌతికము. (Physics) రసాయనము (Chemistry) శారీరము (Physiology) మానసికము (Psychology) యని పలు తెరలుగా వర్ణింపబడినది లేక వర్గీకరింపబడినది.

ఈ వర్గీకృత శాస్త్రములు వేరు వేరు కావున వీనికి మూల నియమ మొక్కటియే. వేర్వేరైన శాస్త్రముల సమన్వయ పరచుశక్తి సృష్టిలో నున్నది. తృణము నుండి సౌరమండలము వరకును, చీమ నుండి సామజము వరకును గలయన్నిటిలోని నియమమొకేరీతిగా నున్నది. ఒకే విధమగు నియమముల నేకము. లున్నప్పుడు వానిని వేర్వేరుగా నీయక ఒకే సూత్రమందు బంధించు నియంతయొక దుండును. ఈ నియంతనే వేదములు బ్రహ్మ (ఈశ్వరుడు) యనుచున్నవి.

మంత్రము :- **యో విద్యాత్ సూత్రం వితతం యస్మిన్ సూతా: ప్రజాఇమా:**
సూత్రం సూత్రస్యయో విద్యాత్ సవిద్యాత్ బ్రాహ్మణం మహత్ ॥ (అ-10-8-37)

అర్థము :- సత్యమైన బ్రహ్మజ్ఞాన మెవరికి గలదను ప్రశ్నికీ మంత్రము. సమస్త సృష్టియందు ఓత, ప్రోతమైయున్న నియమముల నెరుంగు మనుజుడు మాత్రమే బ్రహ్మజ్ఞుడను ప్రత్యుత్తర మిచ్చుచున్నది. (యస్మిన్ ఓతా: ప్రజా: ఇమా:) అతడే నియమముల యొక్క మూల నియమములను కూడ తెలిసికొనును. అనగా సృష్టి నియమముల నన్వేషింపక విజ్ఞానము (seinec) నవహేళన చేయువాడు బ్రహ్మ నియమముల నెరుగ జాలడు. కావున బ్రహ్మము నెరుగలేడు. అట్టివారు తమకు తోచిన విధముగ కర్ణ కర్ణిగా వినిన కల్పిత గాథలను నాధార మొనర్చుకొని ఈశ్వరుని రూపకల్పన చేయుదురు. కొందరు అశత్థ వృక్షమును, మరి కొందరు గంగను, సర్పములను, ఆళ్ళను, రప్పలను, వృషభమును, పరమేశ్వరునిగా భావించిపూజింతురు. వారు సృష్టికర్త నియమముల నన్వేషింపరు. వాస్తవమైన విజ్ఞాన వేత్తయే, బ్రహ్మ విదుడని, నిజమైన బ్రహ్మ విదుడే విజ్ఞాన వేత్తయని వేదమంత్రము తెలుపుచున్నది.

"విష్ణో: కర్మాణి పశ్యత యతోవ్రతానివస్పశే॥
ఋ-1-22-19

సృష్టి పరివ్యాప్తములైన ఈశ్వర వ్యవహార నియమములను గుర్తించుము. వానిని జూచియే నీవు నీవు కర్తవ్యమును చక్కగా తెలిసికొనగలవు. వేదమంత్రములను చిలుక పలుకుల వలె కేవలము వీల్లించుచు ఈశ్వర నియమము వైపు దృష్టి సారించ లేని వాడు ఈశ్వరుని తెలిసి కొనలేడు. ప్రపంచ మనందీశ్వరోపానకులు చాలా తక్కువగా నున్నారు. ఈశ్వర స్థానమున మానవులను, ఇటుకలను, ఆళ్ళను, నదులను, పర్వతములు మొదలగు వానిని పూజించువారు బహుళ ముగానున్నారు. ఈ భ్రాంతియే మానవుల దు:ఖములకు కారణము. ఈశ్వరుని దక్క తక్కినవాని నుపేక్షించకుమని వేదమందు స్పష్టముగా చెప్పబడియున్నది.

"మాచిదన్యత్ విశంసత సఖాయోమారిషణ్యత
(ఋ-8-1-1)

మిత్రులారా ! ఈశ్వరుని తప్ప అన్యుని ఉపాసింపకుడు ఈశ్వరుడను భ్రమతో అన్యమును ఉపాసించుట మహాపాపము. కావున దీని బారి నుండి తప్పుకోవలెను.

ప్రశ్న :- ఈశ్వరోపాసనకు సరియైన విధానమెద్ది ?

ఉత్తరము :- ఈశ్వరుని నియమ చింతనయే ఈశ్వరోపాసనము. మనస్సులో ఈశ్వరుని ధ్యానించవలెను. ఈశ్వరుని గుణకర్మ స్వభావములకు అనుగుణముగా తన గుణ కర్మ స్వభావములను సరిదిద్దు కొనవలెను.
చూడుడు :-

మంత్రము :- **"యుంజతే మన ఉత యుంజతే ధియో విప్రా విప్రస్యబృహతో విపశ్చిత॥**
విహోత్రా దదేపయునా విదేక ఇన్మహి దేవస్య సవితు: పరిష్టుతి: ॥ (య.37-2)

అర్థము :- (విపశ్చిత విప్రా:) మేదావంతులగు విద్వాంసులు-(బృహత:) సర్వజ్ఞుడగు నీశ్వరుని యందు (మన:యుంజతే) మనస్సు నిలుపుదురు మరియు (ధియోయుంజతే) తమ బుద్ధులను తదనుకూలమొనర్తురు. (ఏక:వయునావిత్) సృష్టినియమముల నెరిగిన ఏకైక విద్వాంసుడు (హోత్రావిదధే) యజ్ఞవిధానమును సమార్జించును. (దేవస్య సవితు:) జగత్ప్రేరకుడైన ఈశ్వరుని యొక్క (పరిష్టుతి:) స్తుతి (ఇన్మహి) నిస్సందేహముగా చాలా గొప్పది. ఈశ్వరునిలో నెన్నియో గుణము లున్నవి. విద్వాంసుడు ఆ గుణములను స్మరించుచు ఆ గుణముల కనుకూలముగా వర్తించి తనను, లోకమును ఉద్ధరించును. ఈ ఉపదేశమే గాయత్రీ మంత్ర మందును ఉన్నది.

"తత్స వితుర్వరేణ్యం భర్గోదేవస్య ధీమహి
ధియోయోన: ప్రచోదయాత్ ॥ య-3-35

చేతులను జోడించుటగాని, మంత్రములను జపించుట గాని ఈశ్వర పూజకాజాలదు. ఈశ్వర గుణచింతనము చేయుట వలనను, సృష్టిని గంభీరదృష్టితోనవలోకించుట వలనను, ఈశ్వర గుణకర్మ స్వభావములను రూపొందించు కొనుటవలననే మానవునకు కళ్యాణము సిద్ధించును. "పంచదార-పంచదార" యనిన నోరు తీయనకాజాలదు. పంచదార తినుట చేతనే నోరు తీయబడును. కేవల నామోచ్చారణము ఈశ్వర పూజ కాదు. ఈశ్వరోపదేశములను ఆచరణము నందుంచుటయే ఈశ్వర పూజయగును.

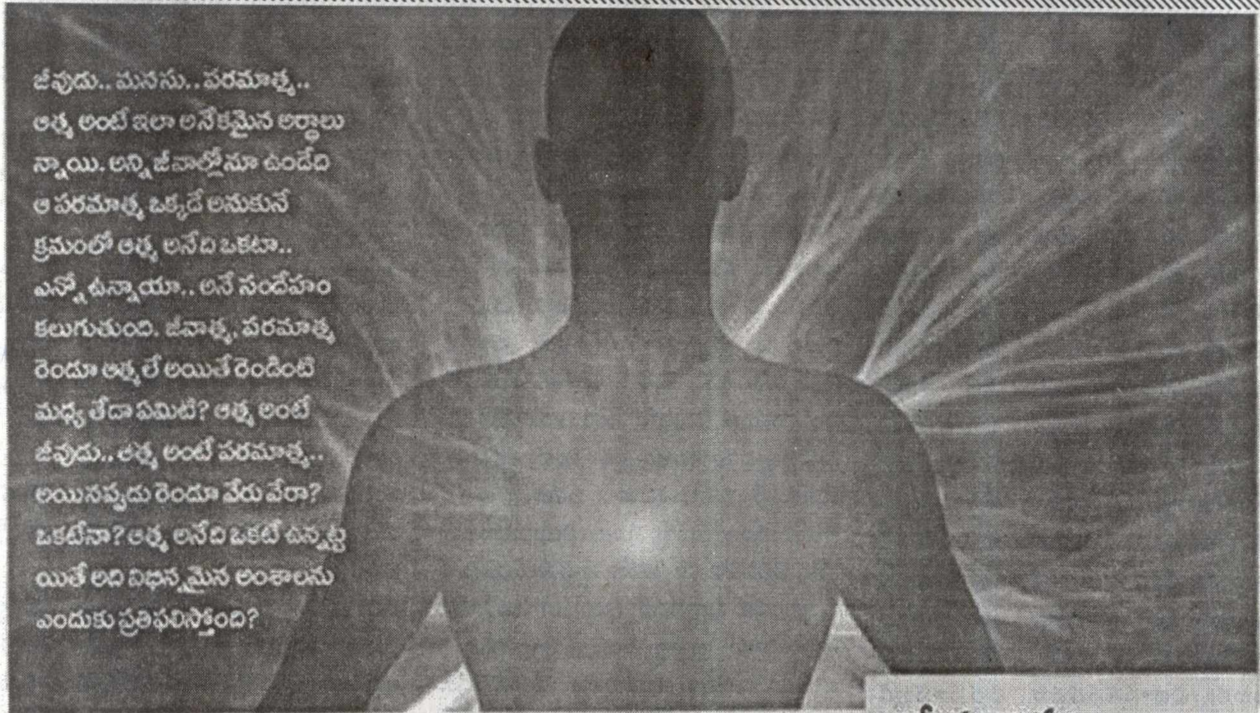

ఆత్మ - పరమాత్మ!

ఆత్మ ఒకటా? లేక అనేకమా? అన్న ప్రశ్న తరచుగా మనసులో కలుగుతుంది. మనుషుల మధ్య విభేదాలకు ఆత్మలే కారణమా అనే ప్రశ్న కూడా కలుగకపోదు. ఒకే ఆత్మ ఉంటే జడ పదార్థం లాగా అది కూడా ఒకే విధంగా ఉండాలి గాని, 'లోకో భిన్న రుచి' అన్నట్లు విభిన్న రుచులకు అది ఆశ్రయం ఎట్లా కాగలుగుతుంది? మన పూర్వీకులు ఆత్మను గూర్చి బాగా ఆలోచించారు. దర్శనాల మాటలు ఆత్మ స్వరూపాన్ని చక్కగా వివరిస్తున్నట్లు అనిపిస్తుంది. ఇంతకు ఆత్మ అనేది ఒకటేనా? అది ఒక ఆత్మ మాత్రం అంతటా వ్యాపించి, సృష్టి రచనకు కారణమవుతుంది. అది లేకపోతే బ్రహ్మాండమే లేదు. ఏది లేకపోతే ఈ బ్రహ్మాండం లేదో ఆ ఆత్మనే పరమాత్మ అన్నారు. సృష్టికర్త పరమాత్మ ఐనప్పుడు మరి సృష్టిలోని ప్రాణికోటి మాటేమిటి? ఎనభై నాలుగు లక్షల జీవరాశుల గురించి వింటుంటాం. అన్ని రకాల దేహాలను ధరించేది ఒకే ఆత్మనా? లేక అనేకాత్మలా? ఈ ప్రశ్నకు సమాధానం తెలుసుకోకపోతే ఆత్మ స్వరూపం తెలియనట్టే.

ఎవరు జీవాత్మ?

ఒక ఆత్మ సృష్టి రచనకు ప్రేరకమవుతుంది. మరి సృష్టిని అనుభవంలోకి తెచ్చుకునే పదార్థం జడమా లేక చైతన్యమా? అనుభవానికి వస్తువు జడమైతే, అనుభవించేవాడు తప్పక జ్ఞానం కలిగినవాడే కావాలి. అంటే అనుభవించేది కూడా ఆత్మే అన్నమాట. ఒకే ఆత్మ సృష్టి రచనకు హేతువు అవుతుందో, అదే ఈ సృష్టిని అనుభవించటానికి పాల్పడితే అసలు సృష్టి ఆవిర్భావానికే అర్థమే ఉండదు. [illegible] ప్రయోజనం కోసమే గాని, దాన్ని నడిపించే దైవము కోసం కాదు. పండు తినేవారి కోసమే గాని చెట్టు కోసం కాదు. వర్షం పంట కోసమే గాని ఆకాశం కోసం కాదు. ఐనప్పుడు సృష్టి జీవుల కోసం అనే అభిప్రాయం తప్పనిసరి అవుతుంది. అలాంటప్పుడు ఈ జీవులు ఎవరు అనే ప్రశ్న ఒకటి ఎదురవుతుంది.

ఇలా ఆలోచించినప్పుడు జీవులు కూడా ఆత్మలే అన్న సమాధానం లభిస్తుంది. అంటే సృష్టికర్త పరమాత్మతో పాటు, సృష్టిలో సుఖదుఃఖాలు అనుభవించే జీవాత్మలు కూడా ఉన్నాయన్నమాట. మరి జీవాత్మలు ఎక్కడి నుండి వచ్చాయి? పరమాత్మ ఎక్కడి నుండి వచ్చాడో జీవాత్మలు కూడా అక్కడి నుండే వచ్చాయని చెప్పవచ్చు. పరమాత్మతో పాటు జీవాత్మలున్నాయి. అవి అతడి బిడ్డలు. ఈ బిడ్డల కోసమే సృష్టి రచన. తన బిడ్డల కోసమే తండ్రి ఈ సృష్టినంతా రచించాడే గాని తాననుభవించడానికి ఎంతమాత్రం కాదు.

సకలమెరిగిన ఆత్మే పరమాత్మ!

పరమాత్మ ఏమి చేస్తుంటాడో మనుషులకి తెలియదు. కాని మనం ఏమి చేస్తున్నామో, ఎప్పటికప్పుడు తెలుసుకోగలిగిన ప్రజ్ఞాశాలి పరమాత్మ.
అందుకే వేమన
"అంతరంగమందు అపరాధములు చేసి
మంచి వానివలెను మనుజుడుండు!
ఇతరులెరుగకున్న ఈశ్వరుడెరుగడా"
అని పరమాత్మకు తెలియనిది ఏమీ లేదని తెలియజేసినాడు.

పరమాత్మ జీవాత్మలకు మంచి స్నేహితుడు. మనకు తెలియకుండానే పరమాత్మ మన బాగోగులు గమనిస్తుంటాడు. మనం మాత్రం అజ్ఞానం చేత అతణ్ణి పట్టించుకోము. "సయుజా సఖాయా" అన్న వేద వాక్యం పరమాత్మతో మనం కలిసి ఉన్నాము అని, పరమాత్మ మనకు ఆప్తుడని తెలియజేస్తుంది.

మనకు పరమాత్మతో కలిగిన అనుబంధమే జీవాత్మలను దగ్గరికి చేరుస్తుంది. మనకు పరమాత్మ ఏ విధంగా ఆప్తుడో, మనం కూడా ఇతరులకు ఆప్తులుగానే ఉండడం నేర్చుకోవాలి. 'ఆత్మీయత' అంటే తన లాంటి ఇంకో ఆత్మను గుర్తించడం. ప్రతి మనిషిలోని తన లాంటి ఆత్మను గుర్తించమనే సందేశం ఉంది. ఆత్మీయత రాగద్వేషాలకు అతీతమైంది. శరీరంలో ఆత్మ అనే చేతన పదార్థం ఒకటి ఉందని తెలియనివారికి ఆత్మీయత గురించి అవగాహన ఉండదు. సహజమైన పరిమళం ఆత్మీయత. పరమాత్మకు మనకు మధ్యన గల ఆత్మీయతా సంబంధాన్ని తోటి ప్రాణులకు విస్తరింపచేసినట్లయితే అంతకంటే కోరదగింది లేదు.

- ఆచార్య మసన చెన్నప్ప

ఇదీ వ్యత్యాసం...

జీవాత్మలు ప్రకృతికి వశమై ఉంటాయి. అందుకే సుఖదుఃఖాలు, గెలుపు ఓటములు, రాగద్వేషాలు జీవాత్మలను ప్రకృతి వల్ల సంక్రమిస్తాయి. ఈ ప్రకృతి అంతా పరమాత్మకు వశమై ఉంటుంది. కాబట్టే పరమాత్మకు ఈ రాగద్వేషాలేవీ ఉండవు.

దేవుడు దేహధారి కాదు. అతడికి రూపం లేదు. జీవాత్మకు కూడా రూపం లేదు గాని దేహధారి అవుతాడు. అందుకే జీవాత్మకు దేహాత్మ అని కూడా పేరు. దేహధారి కనుక జీవుడిగా పేరు వచ్చింది. దేహధారులకు సుఖ దుఃఖాలు తప్పవు. కర్మలు చేయక తప్పదు. కర్మ ఫలాలను అనుభవించక తప్పదు. పరమాత్మకు దేహం లేదు కనుక కర్మలు చేయడు. కర్మ ఫలాలతడికి అంటవు. అందుకే పరమాత్మను క్లేశ కర్మ విపాకాశయాలు లేని వానిగా నిర్వచించారు. అదే సమయంలో ఇచ్ఛా ద్వేషాలు, సుఖ దుఃఖాలు, జ్ఞాన ప్రయత్నాలు కలిగినవానిగా జీవాత్మను నిర్వచించారు.

దేహంలో ఉండే జీవాత్మ ఏదో ఒకచోట ఉంటాడు. ఇంట్లో, గుడిలో, బడిలో, కార్యాలయంలో.. ఇలా ఏదో ఒకచోట ఉంటే మరొక చోట ఉండే అవకాశం లేదు. అందుకే జీవాత్మను ఏకదేశి అని పిలుస్తారు. ఇక పరమాత్మ ప్రత్యేకించి ఒకచోట ఉండడు. విశ్వమంతా అతని ఇల్లే. అందువల్ల పరమాత్మ సార్వదేశికుడిగా చెప్పబడ్డాడు. అంతేకాదు, జీవాత్మ అల్పజ్ఞుడిగా, పరమాత్మ సర్వజ్ఞుడిగా గుర్తించబడినారు.

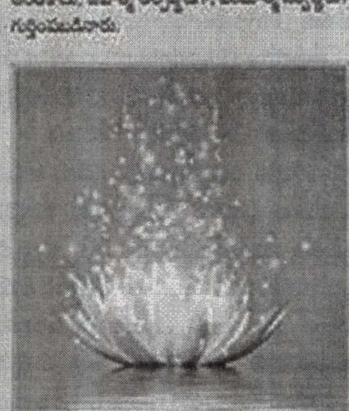

బాల-బాలికల సంస్కార ప్రశిక్షణ శిబిరాలు

ఆర్య సమాజ గోషామహల్, కుర్మగూడ, లాలగూడ మరియు సంస్కృతి పాఠశాలలో బాల-బాలికల సంస్కార ప్రశిక్షణ శిబిరాలు ఏర్పాటు చేయనైనది. అన్నింటి ముగింపు సమావేశము ఆర్య సమాజ లాలగూడలో ఆర్య ప్రతినిధి సభ ఆధ్వర్యములో నిర్వహించబడినది. శిబిరానికి సంబంధించిన చిత్రాలు. శిబిరం నిర్వహించుటలో ఆచార్య విశ్వశ్రవ, ఆచార్య వేదశ్రవ, ఆచార్య సరస్వతి, డా॥ వసుధ అరవింద్‌శాస్త్రి, హరికిషన్‌వేదాలంకార్ మరియు విజేంద్రకుమార్ ప్రత్యేక శ్రద్ధ తీసుకున్నారు. శిబిరాలలో దాదాపుగా 150 విద్యార్థిని-విద్యార్థులను ప్రశిక్షితులు చేయడమైనది. ఇదే విధముగా కేశవ మెమోరియల్ పాఠశాలలో కూడ డా॥ విద్యానంద్ శాస్త్రి గారి చొరవతో బాలురకు ప్రత్యేక ప్రశిక్షణ ఇవ్వనైనది.

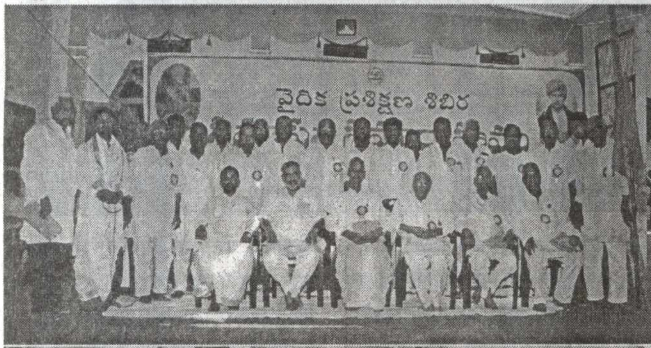

वैदिक बाल संस्कार प्रशिक्षण शिविर आयोजित

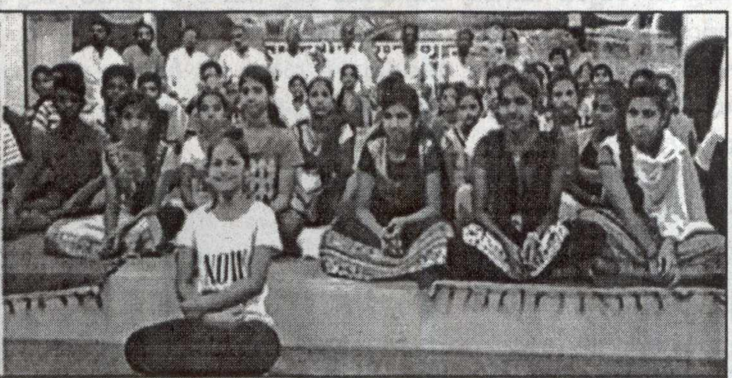

हैदराबाद, 2 मई-(मिलाप ब्यूरो) वैदिक आश्रम, कन्या गुरुकुल, बेगमपेट, कुंदनबाग में वैदिक बाल संस्कार प्रशिक्षण शिविर संपन्न हुआ। आर्य प्रतिनिधि सभा, आंध्र-तेलंगाना द्वारा ग्रीष्म अवकाश में छात्र-छात्राओं के चरित्र और व्यक्तित्व विकास को ध्यान में रखते हुए इस नि:शुल्क शिविर का आयोजन किया गया।

आज यहाँ जारी प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार, आर्य प्रतिनिधि सभा के सहयोगी विद्वानों एवं शिक्षकों की देखरेख में एक सप्ताह तक आयोजित शिविर में विभिन्न प्रकार के प्रशिक्षण दिए गए। सुबह 5 बजे जागरण से रात 9 बजे शयन तक विभिन्न विषयों से संबंधित प्रशिक्षण छात्र-छात्राओं को दिए गए। इनमें योगासन, प्राणायाम, सूर्य नमस्कार, संध्या हवन आदि शामिल हैं। धार्मिक सांस्कृतिक एवं राष्ट्रीय विषयों के अंतर्गत छात्र-छात्राओं को वैदिक मान्यताओं, महापुरुषों, क्रांतिकारी वीरों के जीवन प्रसंगों से अवगत कराया गया। दोपहर विश्राम के पश्चात शाम को शारीरिक विकास को ध्यान में रखते हुए खेलकूद के प्रशिक्षण दिए गए। इनमें दंड चालन, शस्त्र प्रयोग शामिल हैं।

गुरुकुल प्रांगण में सुसज्जित मंच से समापन समारोह का आयोजन हुआ। इसकी अध्यक्षता आर्य प्रतिनिधि सभा के ठा. लक्ष्मण सिंह आर्य ने की। मुख्य अतिथि के रूप में आईआरएस कमिश्नर रत्न कुमार उपस्थित थे। इसके अलावा आर्य प्रतिनिधि सभा के मंत्री विट्ठल राव आर्य, उप-प्रधान हरिकिशन वेदालंकार, उप-मंत्री रामचंद्र कुमार, वैदिक पुरोहित प्रियदत्त शास्त्री, शिविर संचालक डी. जयराज व वसंत राणी मंचासीन रहे। समापन समारोह में प्रशिक्षुओं के अभिभावक तथा नगरद्वय के आर्य समाजों से जुड़े पदाधिकारी व कार्यकर्ता शामिल हुए। समारोह में प्रशिक्षण के दौरान सिखाये गये कार्यों का छात्र-छात्राओं ने प्रदर्शन किया। वक्ताओं ने अवसर पर अपने विचार रखते हुए विद्यार्थियों को मनोबल बढ़ाया। विट्ठल राव आर्य ने छात्रों के प्रदर्शन पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा कि वे पढ़ाई के साथ-साथ अपने चरित्र निर्माण व समाज सेवा के कार्यों में भी आगे बढ़ें। ऐसा करके वे राष्ट्र के उत्तरदायी नागरिक बनेंगे। उप-मंत्री रामचन्द्र कुमार ने भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए पारंपरिक शिक्षा को आवश्यक बताया, किन्तु चरित्र निर्माण और सुख-शांति पाने के लिए आध्यात्मिक शिक्षा को भी ग्रहण करने की सलाह दी। हरिकिशन वेदालंकार ने छात्रों को सदाचार और सत्संग से जुड़ने की सीख दी। अध्यक्षीय भाषण में ठा. लक्ष्मण सिंह ने प्रशिक्षुओं को अपनी साधना निरंतर जारी रखने के लिए प्रेरित किया। मुख्य अतिथि रत्न कुमार ने प्रतियोगिताओं के विजयी प्रशिक्षुओं को कप भेंट किया। डी. जयराज ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

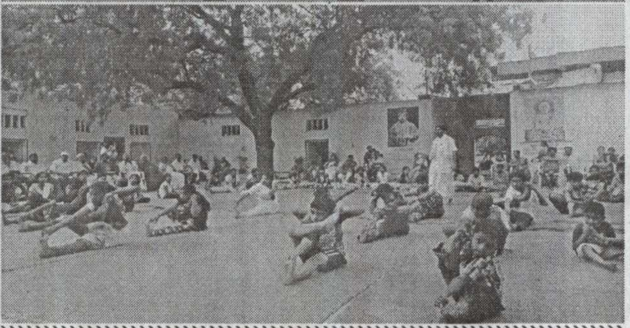

आर्य प्रतिनिधि सभा आ.प्र.-तेलंगाना के तत्वावदान में

वैदिक आश्रम कन्या गुरुकुल कुंदनबाग, बेगमपेट में

वैदिक बाल संस्कार प्रशिक्षण शिविर आयोजित

शिविर में बालक का आसन करते हुए अद्भुत दृश्य

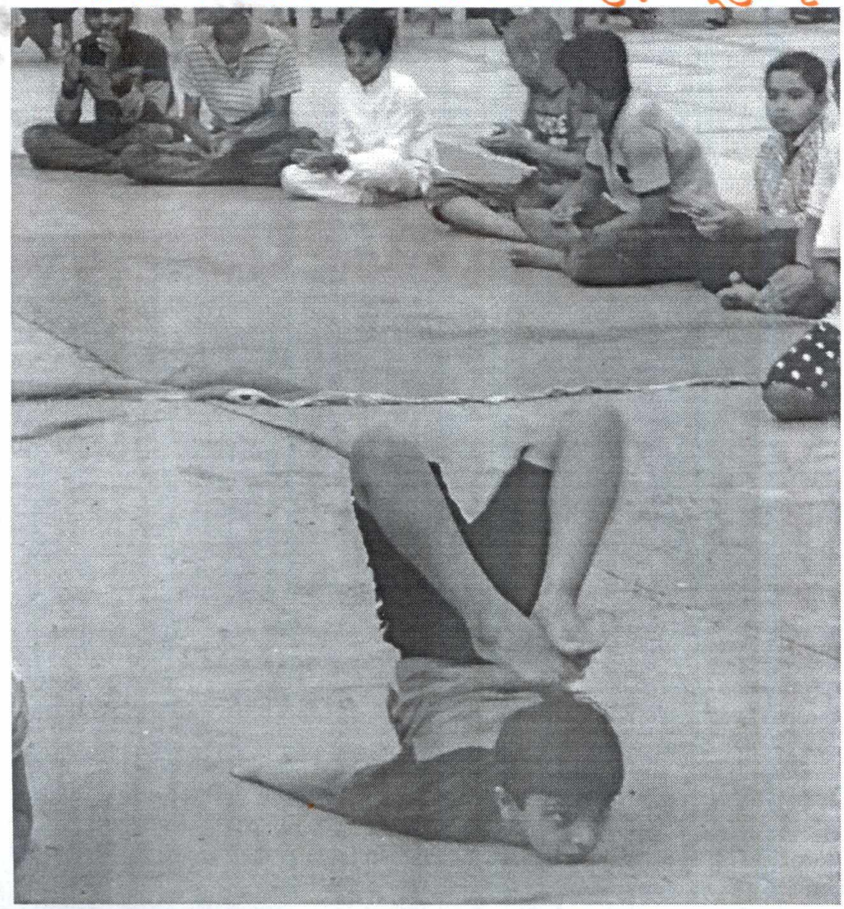

Dateof Publication 2nd & 17th of every Month, Date of posting 3rd and 18th of every month
आर्य जीवन 18-05-2017 Registered-Reg. No. HD/783/2015-17 RNI.No.52990/93

ఆర్య జీవన్

హిందీ-తెలుగు ద్విభాషా పక్ష పత్రిక
Editor: Vithal Rao Arya, M.Sc. LL.B., Sahityaratna
Arya Prathinidhi Sabha AP-Telangana, Sultan Bazar, Hyderabad-95.
Phone No. 040-24753827, 66758707, Fax: 040-24557946
Annual subscription Rs. 250/- సంపాదకులు - విఠలరావు ఆర్య మంత్రి సభ

To,

సరదా.. సరదాగా...

- ఆర్యప్రతినిధి సభ ఆధ్వర్యంలో ఉచిత వేసవి శిబిరం
- కుల, మతాలకతీతంగా పాల్గొన్న విద్యార్థులు
- చిన్నారులకు విజ్ఞానంతోపాటు, నైపుణ్య శిక్షణ
- బస్తీ పిల్లలకే పెద్ద పీట

కుందన్‌బాగ్‌లోని కన్యా గురుకులంలో ఉచిత వేసవి శిబిరంలో విద్యార్థుల ప్రదర్శనలు

బంజారాహిల్స్: మొన్నటి వరకు పాఠశాలల్లో చదువులు, ఆపై పరీక్షలతో తీవ్ర ఒత్తిడికి గురైన విద్యార్థులు వేసవిలో తమకు ఆసక్తి ఉన్న కళలపై దృష్టిసారించి వేసవి సెలవులను హాయిగా గడుపుతున్నారు. పాఠశాలలు తెరిస్తే నేర్చుకునేందుకు వీలు పడని విషయాలపై వారు ప్రస్తుతం దృష్టిసారించి ఉత్సాహంగా నేర్చుకుంటున్నారు. వీరి ఉత్సాహానికి ఆర్యప్రతినిధి సభ హైదరాబాద్ ఆధ్వర్యంలో సంస్కార్ ప్రతిక్షా శిబిరం తన వంతు చేయూతనందిస్తుండటంతో వారి ఆనందానికి అవధుల్లేకుండా పోయాయి. ఓ వైపు సంప్రదాయ నృత్యాలు, మరోవైపు విద్య, జీవనోపాధి రంగాలపై ఇస్తున్న శిక్షణ వీరికి ఉపయోగపడుతుంది. కుందన్‌బాగ్‌లోని కన్యాగురుకులంలో ఆర్యప్రతినిధి సభ హైదరాబాద్ ఆధ్వర్యంలో ఉచిత వేసవి శిబిరం గత వారం రోజులుగా ఆనందోత్సాహాల మధ్య జరుగుతున్నది. కుల మత భేదాలకు అతీతంగా ఇక్కడ కర్రసాము, కత్తిసాము, దైవభక్తి, దేశభక్తి గీతాలాపన, యోగా, ప్రాణాయామం, సంధ్యావందనంతోపాటు అగ్నిహోత్రం చేయడం ఎలా అన్న దానిపై కూడా శిక్షణ ఇస్తున్నారు. అందరూ కలిసి ఆనందంగా గడుపుతున్నారు. విద్యార్థుల కోసం సంప్రదాయ నృత్యాలపై శిక్షణ ఇస్తూనే భారతీయ సంస్కృతి సంప్రదాయాలపై అవగాహన కలిగిస్తున్నారు. బంజారాహిల్స్, జూబ్లీహిల్స్, పంజగుట్ట, శ్రీనగర్‌కాలనీ, బేగంపేట, అమీర్‌పేట తదితర ప్రాంతాల నుంచి 80 మంది విద్యార్థులు శిబిరంలో శిక్షణ పొందుతున్నారు. ఎస్పీటీ నగర్ ప్రభుత్వ పాఠశాలకు చెందిన ఉపాధ్యాయుడు జయరాజ్ ఈ శిబిరానికి నిర్వాహకుడిగా వ్యవహరిస్తున్నారు. బాల బాలికలకు ఉచితంగా వసతితోపాటు భోజనాలు కూడా ఏర్పాటు చేశారు. ప్రతిరోజూ తెల్లవారుజామున 5 గంటల నుంచి ఈ శిబిరం యోగాతో ప్రారంభమవుతుంది. విద్యార్థులందరూ ఎంతో నేర్చుకున్నామనే భావనతో ఉపాధ్యాయులకు కృతజ్ఞతలు తెలుపుతున్నారు. ఈ వేసవి శిబిరం ముగింపు వేడుకలు ఆదివారం కన్యాగురుకులంలో ఘనంగా నిర్వహించారు.

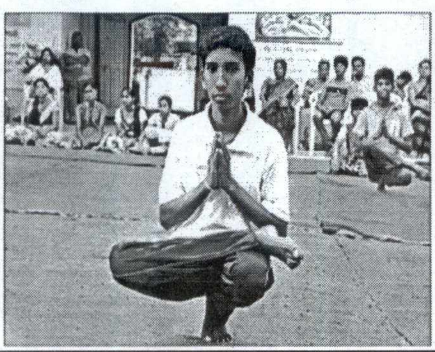

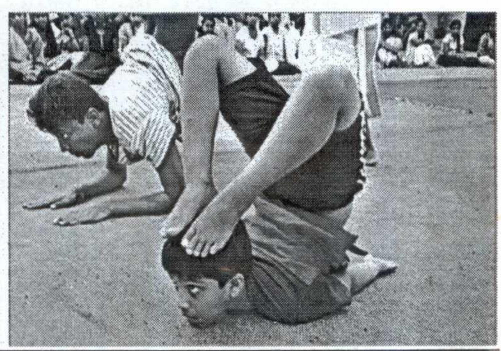

THE VIEWS & THE NEWS PUBLISHED IN THIS ISSUE MAY NOT NECESSARILY BE AGREEABLE TO THE EDITOR
Editor Vithal Rao Arya ● acharyavithal@gmail.com, Mobile : 09849560691

సంపాదకులు : శ్రీ విఠలరావు ఆర్య మంత్రి సభ ఆర్యప్రతినిధి సభ ఆ.ప్ర.-తెలంగాణ, సుల్తాన్‌బజార్, హైదరాబాదు-95. Ph: 040-24753827, Email : acharyavithal@gmail.com
संपादकः श्री विट्ठलराव आर्य मंत्री सभा ने सभा की ओर से आकृति प्रेस चिक्कडपल्ली में मुद्रित करवा कर प्रकाशित किया ।
प्रकाशकः आर्य प्रतिनिधि सभा आं.प्र.-तेलंगाना, सुल्तान बाज़ार, हैदराबाद तेलंगाना-95.